सफलता के सात वर्ष

वर्ष 7, अंक 10 इलाहाबाद जुलाई 2008

विश्व स्नेह समाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कीमत 5 रुपये

चार कहानियाँ

आतंकवाद कारण और निवारण

अरुणाचल:किस ओर

भ्रष्टाचार का वाईरस

केचुंए की खाद: वर्मी कंपोस्टिंग

रचनाएं आमंत्रित है

लेख संग्रह:दो लेख, सचित्र जीवन परिचय सहित अधिकतम १००० शब्द-२००/-रुपये/, १०००-२००० शब्द ५००/- **अथवा** दस लेख, प्रत्येक १०००शब्द-१०००रु० प्रत्येक १०००-२००० शब्द-२०००/रुपये

लघु कथा संग्रह हेतु : दो लघु कथांए, सहयोग राशि २००/-रुपये **अथवा** दस लघु कथांए, सहयोग राशि २०००/-रुपये

कहानी संग्रह हेतु : एक कहानी, सचित्र जीवन परिचय तथा सहयोग राशि २५०/-रुपये, **अथवा** चार कहानी, सहयोग राशि ५००/-रुपये

प्रेषण की अंतिम तिथिः ३० जुलाई २००८

ए आग कब बुझेगीः

इसमें आरक्षण/भ्रष्ट्राचार/दहेज/जातिवाद/नारी शोषण/ राजनीति से संबंधित आलेख/कविताएं/ कहॉनिया/लघुकथाएं/व्यंग्य रचनाएं/संस्मरण आमंत्रित है. इस बात विशेष ध्यान रक्खें कि रचनाएं १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा दो रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : ३० सितम्बर २००८

के साथ आमंत्रित है. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें-आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है. ५००रुपये से कम का चेक संग्रह चार्ज के साथ ही स्वीकार्य होगा.

लिखें या सम्पर्क करें:प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 9335155949 इेमेलः sahityaseva@rediffmail.com

प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

अपने काव्य संग्रह, कहॉनी संग्रह, आलेख संग्रह आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण:

१.मात्र लागत मूल्य पर
२.विक्री की व्यवस्था
३.प्रचार प्रसार की व्यवस्था
४.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
इेमेलः sahityaseva@rediffmail.com

विश्व स्नेह समाज

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

वर्षः७ अंकः१० जुलाई०८,इलाहाबाद

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः
1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अंदर के पन्नों में:

आतंकवाद कारण और निवारण: ६

आर्थिक व सामाजिक न्याय-संबंधी नीतियों का कठोरता से क्रियान्वयन, पंचशील सिद्धात का प्रतिपादन करना चाहिए, फिल्म तथा टी.वी.कार्यक्रमों में सुधार, अत्यधिक धन की लालसा भी कारण है

अरुणाचल:किस ओर ९

अरुणाचल में एक भी हिन्दी चैनल वहॉ दिखाई/सुनाई नहीं दे रहे है. इसका मूल कारण है चीन द्वारा अत्याधुनिक व अधिक क्षमता का ट्रांसमीटर लगाया जाना. ट्रांसमीटर की कमी के कारण यहॉ मजबूरी में चीनी चैनल सुनने पड़ते है. चीन अरुणाचल को विवादग्रस्त मानता रहा है. वह समय–समय पर अरुणाचल को अपने नक्शे में प्रदर्शित भी करता रहता है. चीन अरुणाचल के निवासियों को यह कह कर कि ये हमारे ही नागरिक है वीसा जारी करने से भी इन्कार करता रहा है.

केचुंए की खाद: वर्मी कंपोस्टिंग ११

अपनी बात– 4
प्रेरक प्रसंग–5
संस्कृति –12
समाजः भ्रष्टाचार का वायरस–14
मिलावट का जहर–15
कहॉनीः हाय रे हमार मेनका–17
व्यक्तित्व–20
अध्यात्मः गंगा की पावनता में वृद्धि – 21
कहॉनीः सिर्फ तेरा इंतजार–22
स्नेहबाल मंच–25
कविताएं–18,19, 23, 24, 26
साहित्य समाचार–27
स्वास्थ्य–28
चिट्ठी आई है–29
लघु कथाएं–30
पुस्तक समीक्षा–34

अपनी बात

आखिर कब तक सोते रहोगें: नीति निर्धारकों

जहॉ भी जाता हूँ, वीरान नजर आता है
खून में डूबा हर मैदान नजर आता है।
कैसा है कि वक्त कि दिन के उजाले में भी
नहीं इन्सान को इन्सान नजर आता है.

गोपालदास नीरज की ये पंक्तियॉ आज आतंकवाद का सही चेहरा प्रस्तुत कर रही है. आज यहां तो कल वहां आतंकवाद का खूनी मंजर जारी है. आज हिन्दुओं के लिए अच्छा दिन माना जाने वाला मंगलवार, मुस्लिम भाईयों का शुक्रवार अशुभ दिन साबित हो रहा है. यक्ष प्रश्न यह है उठता है कि आतंकवाद क्यों पनप रहा है? राजनैतिक दबदबा बनाए रखना, धर्म और जाति का वर्चस्व बनाए रखना, बेरोजगारी, अशिक्षा, कुसंस्कारी शिक्षा, भौतिकवाद, स्वार्थवाद इसके मूल जड़ है और ये जड़े दिन–प्रतिदिन पटने के बजाए और गहरी होती जा रही है. एक क्षेत्र से, एक देश से दूसरे देश में आतंकवादी संगठन अपना कारनामा दिखा रहे है. इनका कोई दीन–धर्म नहीं होता. आज समूचे विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है जो यह कह सके कि हमारा देश इनसे अछूता है. अपने देश में कश्मीर से शुरु हुआ यह खेल आज सम्पूर्ण भारत को लील रहा है. इससे चारो ओर अशांति और भय का माहौल है. लोग चूहे, बिल्लियों व कुत्तों की भांति मर रहे है.

जहां तक प्रश्न उत्पातों और मुवावजो का है तो यह इस देश की नपुंसक नेताओं की अक्षमता जिनके कारण–उचित अनुचित नहीं देखा जाता, उदाहरण–कुछ महीनों पूर्व मालेगांव की एक मस्जिद में बम फूटने पर मरनेवालों को तत्काल पांच लाख और घायलों को वही 25/50 हजार की तत्काल सहायता. ऐसा ही उसके बाद हैदराबाद की मस्जिद में बम फूटे तो किया गया. इतना ही नहीं बम फटते ही तत्काल भारत गृहमंत्री मातपुरसी और क्षमा याचना के लिए पहुंच उनके लिये तश्तरी में सहायता की घोषणा कर दी. राज्य मुख्यमंत्री ने भी क्षमा की जैसे उसीने यह अपराधा किया या कराया है, परन्तु वहीं मुम्बई के लोकल रेलों में हुए बम विस्फोट से निर्दोष मरने वालों के लिए दो वर्षो तक उसी गृहमंत्री को वहां आने की जरुरत नहीं लगी कारण आप खुद अंदाज लगा लीजिए.

अब प्रश्न यह है उठता है कि आतंकवाद को कैसे समाप्त किया जाए? इसका सफाया असम्भव तो नहीं परन्तु कठिन जरुर है. इसके लिए हिम्मत चाहिए. नीति निर्धारकों को कठोर निर्णय लेने होगें. साथ ही साथ पूरी सावधानी, कुशलता व तत्परता भी दिखानी होगी. समूल नष्ट करने के लिए पहले हमें निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा.

- शिक्षा प्रणाली को सुधार कर मूल्यपरक व संस्कारित बनाना
- जनता में जागरुकता व चेतना लाना
- राजनीति से परे होकर राजनेताओं को देश हित मे नीति निर्धारण करना व निर्णय लेना
- सामाजिक कुरीतियों जैसे भ्रष्टाचार, भय, बेरोजगारी, अशिक्षा, भूखमरी, क्षेत्रवाद, जातिवाद धर्मवाद व असमानता को दूर करना. इस तरह की कुरीतियों को बढ़ावा देने वाले नेताओं को कठोरतम सजा का प्राविधान करना.
- आतंकवादियों को कठोर से कठोर दण्ड का प्राविधान करना.
- देश द्रोहियों को, देश की संवैधानिक व्यवस्थाओं के विरुद्ध प्रचार करने वालों को कठोर दण्ड का प्राविधान करना.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

स्तम्भः क्या करें, क्या न करें

साहित्य और आम पाठकः आज आम पाठक की साहित्य पढ़ने की रुचि प्रायः समाप्त सी हो गई है. इसका कारण कुछ भी हो, पर स्थिति दुखदायी है. जीवन को सुखद बनाने के लिए साहित्य बहुत बड़ी दवा है. अब जब साहित्य को लोकप्रिय करना है तो एक ही रास्ता समझ में आता है कि साहित्य को लघु कर दिया जाए. सम्भवतः साहित्य के प्रति अरुचि का बहुत बड़ा कारण समय का अभाव है. ऐसे में लघु साहित्य मददगार हो सकता है.

लघु साहित्य से अभिप्राय लघु कथा, क्षणिका, लघु नाटक आदि है. किसी बात को कम समय में कहना अधिक कठिन है, पर समझना अधिक आसान है. लघु साहित्य इस दिषा में निष्चित मदद करेगा. आज उपन्यास को पढ़ने वाले लोग या तो वे हैं जिनके पास समय ही समय है या लम्बे रेल यात्रा पर जा रहे हों. लघु साहित्य को यदि जनता के बीच फैलाया जाए तो सम्भावना है कि अरूचि, रुचि में बदल जाए.

साहित्य के प्रति जनता की रुचि केवल बैठक में किताबें सजाने तक सीमित रह गई है. वास्तव में उस साहित्य को सम्भवतः उन्होंने पढ़ा भी नहीं है. लघु साहित्य बैठे-बैठे दस मिनट में भी पढ़ा जा सकता है. इसलिए वह व्यक्ति जिसे पहले साहित्य के प्रति रुचि थी और अब समय नहीं है को भी कठिनाई नहीं आएगी.

बच्चों में बचपन से पढ़ने के संस्कार डाले जायें तो भी आगे चलकर आवष्यक नहीं है कि वे साहित्य में कोई रुचि दिखायेंगे. पर यदि जरा सी भी रुचि हो और समयाभाव में षौक को पूरा नहीं किया जा रहा है तो अब पूरा हो सकेगा. इसलिए मान्यता यही बनती है कि साहित्य को संक्षेप में करके लघु रुप में जनता में वितरित किया जाए.

अष्लील साहित्य के प्रति यदि रूचि बढ़ती जाती है तो समाज के लिए बहुत खतरनाक है. इसका कारण यह है कि इससे लोगों में असामाजिक कार्यो में उनकी रुचि बढ़ जायेगी. इसलिए आवष्यक है कि अच्छे और स्वच्छ साहित्य को लोकप्रिय बनाया जाये जिससे लोगों में पढ़ने-पढ़ाने की रुचि बढ़ेगी. यदि साहित्य समाज का दर्पण है और हम दर्पण में सही रुप नहीं दिखाएँगे तो कैसे कल्पना की जा सकती है कि एक अच्छे समाज की नींव डलेगी.

डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

पराधीन कर्मो का त्याग करें.

यद्यत्परवशं कर्म तत्तद्यत्नेन वर्जयेत्।यद्यदात्मवशं तु स्यात्तत्सेवेतयत्नतः।। मनुस्मृति ४/१५६

अर्थात् जो-जो कर्म पराधीन अर्थात् दूसरों की प्रार्थनादि से सिद्ध होते है, उन-उन कर्मो का यत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए और जो कर्म स्वाधीन है, दैहिक व्यापार द्वारा सिद्ध हो सकते है, उन परमात्म-ज्ञान प्रभृति कार्यो का यत्नपूर्वक अनुष्ठान करना सर्वोत्तम है.

सुख-दुःख समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।। गीता २/३८

तुम सुख-दुख, जय-पराजय, हानि-लाभ का विचार किए बिना युद्ध के लिए युद्ध करो अर्थात् कर्म के लिए कर्म करो. ऐसा करने से तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा.

धर्मेण सुखामासीत

धर्म करो, धर्म से सुख मिलता है. धर्म की उत्पत्ति सत्य से होती है. दया और दान तथा त्याग से वह बढ़ता है. क्षमा में वह निवास करता है. क्रोध से उसका नाश होता है.

डॉ० रमाशंकर पाण्डेय, जमशेदपुर, झारखंड

आदाब अर्ज

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
नन्हीं चीटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रंगो में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना गिरकर चढ़ना न अखरता।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नही होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जाकर खाली हाथ लौट आता है।
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।

मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है-स्वीकार करो,
क्या कमी रह गयी देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो नींद चैन की त्यागो तुम,
संघर्षो का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जयजयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

श्रीमती शांतिदेवी विश्वनाथ टेकरीवल फाउन्डेशन, मुंबई

परिचर्चा

आतंकवाद कारण और निवारण

पाकिस्तान मुख्य आस्तीन का सांप है

डॉ. एन.एन.शर्मा, मुम्बई

आज संसार में बुद्ध और ईसा जैसे लोगों की कमी है जो अपने संकते मात्र से उठे हुए अस्त्रों-शस्त्रों और बमों के मुँह झुका देते. श्रीलंका में सिंहलियों और एलटीटीई के रुप में तमिलों के झगड़े, रुस के चेचन्यों में, फिलिस्तीन में, पाकिस्तान, अरब, इरान और इराक आदि में शिया-सुन्नी झगड़े, इंग्लैड में रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टंटो के विवाद. विगत बीस वर्षो में निरंतर नहा रहे हैं, फिर भी पाषाण हृदयशील आतंकवादियों का हृदय नहीं पसीजा. आसाम में जहां उल्फा संगठनों ने स्वतंत्र राज्य की मांग को लेकर हा हाकार मचा रखा है., वहीं आईएसआई से प्रेरित आतंकियों ने जम्मू तथा कश्मीर राज्य में तबाही मचा रखी है. जो कभी स्वर्ग कहा जाता था वह अब रेगिस्तान बन गया है. अमेरिका भी इससे अछूता नहीं रहा. भारत ने विगत दो दशकों में इस राक्षसी समस्या की जितनी मार झेली है, उतनी शायद अब तक किसी भी अन्य राष्ट्र ने नहीं झेली. हमारे देश में विस्फोट होते हैं तो हमें सांत्वना देकर चुप करा दिया जाता है, लेकिन उनके देश में इस तरह के विस्फोट होते है तो युद्ध का ऐलान हो जाता है.

पाकिस्तान वह आस्तीन का सांप है, जिस पर किसी प्रकार के आग्रह या चेतावनी का असर नहीं पड़ता. वह न केवल सीमा-पार से आतंकवाद को संरक्षण व बढ़ावा दे रहा है, अपितु भारत के भीतर भी अलगाववादी समाज विरोधी तत्वों और देश द्रोहियों को बरगलाकर अवैध हथियार-गोला बारुद उपलब्ध कराकर और विध्वंसकारी प्रशिक्षण देकर सर्वत्र आतंक व विद्वेष फैला रहा है. आज, सुबह से बाहर निकला हुआ व्यक्ति शाम को सही सलामत घर पहुँचेगा कि नहीं, यह आशंका हम सभी के दिलों में रहती है. भारत की सबसे सुन्दर और आकर्षक समझी जाने वाली मुम्बई नगरी आज बम नगरी बनकर बारुद के ढेर पर बैठी है. कौन कब इस शहर को हिलाकर रख दे, कहा नहीं जा सकता.

आतंकवाद का मुकाबला भारत को खुद अपने स्तर से करना होगा और इसके लिए राष्ट्रीय अभियान की सख्त जरुरत है. हमें किसी ऐसे पड़ोसी देश तथा उसके प्रभाव से प्रभावित ऐसे देशद्रोही को सहन नहीं करना चाहिए जो हमारी एकता और भाईचारे को खंडित करना चाहता है. सरकार के साथ-साथ हमारा भी यह कर्तव्य है कि इस आतंकवाद को समाप्त करने में हम यथा संभव योगदान दें. बंधुत्व, सहिष्णुता तथा धार्मिक सद्भाव के द्वारा ही इस पर काबू पाया जा सकता है. हमें कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे उग्रवादियों को प्रोत्साहन मिलें. दंगा और फसाद का रास्ता पकड़ने वाले लोगों के प्रति कठोर कार्यवाही की जाए. उग्रवाद की जड़ को समाप्त करने का सबसे बड़ा साधन राष्ट्रीय एकता है. सांप्रदायिक एकता तथा सद्भावना का रास्ता ही सर्वाधिक कारगर साबित हो सकता है क्योंकि युद्धकामी शक्तिशाली देश ही तो आतंक का वातावरण बनाने के लिए जिम्मेवार हैं. आज आतंकवाद एक गहन समस्या है. इसका मुख्य कारण है भूखमरी और बेरोजगारी. आज का शिक्षित युवक हाथ में डिग्री लिये नौकरी की तलाश में दर-दर भटकता फिरता है लेकिन उसे मिलती है. यदि सरकार उन्हें रोजगार उपलब्ध कराए तो इस समस्या को काफी हद तक सुलझाया जा सकता है. आइ.एम.एफ, वर्ल्ड बैंक तथा डब्ल्यू टी.ओ. जैसे विश्वस्तरीय संस्थाएं विकासशील देशों में रोजगार के साधन जुटाने के लिए यदि आर्थिक सहायता दे तो इन देशों का ही नहीं बल्कि समूचे विश्व का विकास होगा.

रितेन्द्र अग्रवाल,जयपुर

शुरु-शुरु में जो दहशत गर्द, बदमाश किस्म के लोग थे वही आतंकवादी कहलाते थे. लेकिन आज जिस तरह से हमारे नेता, अफसर, दबदबे वाले लोग कार्य कर रहे है उन्हें भी सफेद पोश आतंकवादी कहा जा सकता है. आतंकवाद के मुख्य रुप से निम्न कारण है-बढ़ती जनसंख्या, घटते रोजगार, अभावों के बावजूद तीव्र लालसा, सुगम साधनों की अपेक्षा, क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थ तथा घटते जीवन मूल्य.

आतंकवाद के निवारण के लिए हमें पहले यह सुनिश्चित करना पड़ेगा कि हर युवा शिक्षित हो, शिक्षा के पश्चात उसे नौकरी या रोजगार मिल रहा है कि नहीं. युवाओं को ख्याली पुलाव से बचना होगा, टी.वी. फिल्म, मीडिया आदि को स्वास्थ्य बनाना होगा. हमारे शिक्षकों, राजनेताओं को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी. आज स्वार्थ पूर्ति करो और आगे बढ़ों का खतरनाक सिलसिला चल रहा है. ऐसे में टूटन, विघटन, असंतोष आदि पनपता है. विद्रोह स्वरुप युवा आतंकवाद की राह पकड़ लेता है.

आर्थिक व सामाजिक न्याय-संबंधी नीतियों का कठोरता से क्रियान्वयन

कु० साधना बलवन्त, गाजीपुर

आतंकवाद को मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है-मिशनरी आतंकवाद, प्रतिक्रियावादी आतंकवाद तथा पेशेवर आतंकवाद. आज हमारा देश मिशनरी आतंकवाद से ज्याद पीड़ित है. आतंकवाद के लिए किसी एक कारण को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है. किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थितियां इसके लिए उत्तरदायी हो सकती है. यदि हम विश्व स्तर पर व्याप्त आतंकवादी गतिविधियों का मूल्यांकन करे तो हमें उनके मूल में उक्त भावनाओं का ही दर्शन होगा. यह भी हो सकता है कि आतंकवाद के लिए आंतरिक स्थितियां स्वयं में उत्तरदायी न हो, परन्तु जब देश के अन्दर असंतुष्ट या अलगावादी तत्वों को विदेशी गुप्तचर एजेन्सियों की प्रेरणा व पोषण मिले तो, वे आतंकवाद को जन्म देते है. इसका प्रत्यक्ष प्रमाण पाकिस्तान की गुप्तचर एजेंसी आई. एस.आई है.

यद्यपि इन आतंकवादियों के निहित व्यक्तिगत स्वार्थ होते है, परन्तु इन्हें बढ़ावा देने में राजनीतिक अक्षमता एवं आर्थिक विषमता का महत्वपूर्ण योगदान होता है. किसी देश के राजनीतिक रुप से कमजोर होने पर एक तरफ जहां सीमा पार से आतंकवादी गतिविधियों के बढ़ने का भय होता है, वही दूसरी तरफ देश के अन्दर राष्ट्रीय एकता में कमी के फलस्वरुप अलगाववाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद आदि के सहारे आतंकवाद का उदय होता है. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई देश अपनी राजनीतिक स्वार्थपूर्ति हेतु विदेशों में आतंकवाद को बढ़ावा देते है. इसी प्रकार आर्थिक विषमता के कारण सामाजिक विभेद, क्षेत्रवाद, ऊंच-नीच एवं अमीरी-गरीबी की भावना जन्म लेती है, जो आतंकवाद के पनपने में उत्प्रेरक का कार्य करती है. वर्तमान में भारत में आतंकवादी एवं विघटनकारी प्रवृत्तियों में जिस तीव्रता से वृद्धि हुई है, उस पर प्रशासन भी लगाम लगाने में असफल रहा है. अतः प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह आतंकवादियों से मुकाबला करें. आज आतंकवाद पंजाब एवं कश्मीर की समस्या मात्र न रहकर सम्पूर्ण भारत की समस्या बन गया है. भारत में आतंकवाद की स्थिति जटिल व गम्भीर इसलिए है क्योंकि यह पाकिस्तान द्वारा प्रत्यक्ष तथा कई बड़ें राष्ट्रो द्वारा अप्रत्यक्ष रुप से प्रायोजित है. यह आतंकवाद की समस्या ही है जिसने भारत एवं अमेरिका को एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया है. इसकी जड़ें राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गहरी पैठी हुई है. फिर भी राष्ट्रीय इच्छा शक्ति, राष्ट्रीय नीतियों व सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं पर आम सहमति, शासन व शासितों के मध्य सूचनाओं का आदान-प्रदान, राष्ट्र के सभी पिछड़े क्षेत्रों का समुचित विकास, धार्मिक सहिष्णुता व भाईचारे की भावना का विस्तार, आर्थिक व सामाजिक न्याय-संबंधी नीतियों का कठोरता से क्रियान्वयन, लोगों को विश्वास में लेते हुए लोकतान्त्रिक प्रक्रिया को शुरु करके और पड़ोसी राष्ट्रों के खिलाफ कूटनीतिक माध्यम से आतंकवाद को नियन्त्रित किया जा सकता है.

अगर शासन मुस्तैदी से कार्य करे तो आतंकवाद से निपटना कोई कठिन कार्य नहीं है.

आज जबकि विश्व के सभी देश आर्थिक रुप से वैश्वीकरण की तरफ अग्रसर है, तो आवश्यकता यह है कि आतंकवाद के विरुद्ध उनमें वैश्वीकरण की भावना का संचार हो. क्षेत्रीय स्तर पर पनपे आतंकवाद को दूर करने के लिए सम्बधित देश द्वारा एक सुदृढ़ नीति का विकास करके आतंकवाद के पनपने में सहायक तत्वों का पता लगाकर, आतंकवादी संगठनों की समस्याओं को दूर करने का उपाय करना चाहिए.

पंचशील सिद्धात का प्रतिपादन करना चाहिए

पूर्णेन्दु कुमार दीक्षित, बरहज, देवरिया

महाशक्तियां अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए आतंकवाद को बढ़ावा दे रही है. राजनीतिक चेतना का दबाब, धार्मिक उन्माद, युवा वर्ग में विभाजन, हिंसक मनोवृत्तियां, आर्थिक विषमताएं इसके मूल कारण है. इसके निवारण के लिए पं. जवाहर लाल नेहरु के पंचशील सिद्धात का प्रतिपादन करना चाहिए. सरकार जनता का सहयोग लेकर, उन्हें जागरुक कर भी छुटकारा पाया जा सकता है. इसके लिए अलग गुप्तचर एजेंन्सी का गठन करना चाहिए. शिक्षा का व्यापाक प्रचार प्रसार करके, नैतिक मूल्यों की स्थापना करके, बेरोजगारी दूर करके इससे छुटकारा पाया जा सकता है.

फिल्म तथा टी.वी.कार्यक्रमों में सुधार

संध्या गुप्ता, देवरिया

समाज के सत्ताधारी एवं प्रतिष्ठित लोग, बदला लेने की भावना, परिवार या समाज द्वारा नवजवानों का तिरस्कार, बेरोजगारी और पक्षपात, फिल्में तथा टेलीविजन के कार्यक्रम इसके मुख्य कारण है. इसके निवारण के लिए सजा में कमी, बेरोजगारी का निवारण, परिवार या समाज द्वारा युवा वर्ग का पथ प्रदर्शन तथा उचित परामर्श, युवापीढ़ी की बदले की भावना त्याग, फिल्म तथा टी.वी. के कार्यक्रमों में सुधार.

अत्यधिक धन की लालसा भी कारण है

कु० स्नेहलता, इलाहाबाद

आज शिक्षित व्यक्ति अपनी योग्यतानुरुप सोच के अनुसार सफल नहीं हो पाता और उसमें जब सहन करने की क्षमता खत्म होने लगती है तो वह हर वो तरीके अपनाने को तैयार हो जाता है जिससे वह सफल हो सके. अत्यधिक धान की लालसा भी इसका एक कारण है. पैसों की लालच में युवा वर्ग आतंकवादी गतिविधियों में सरीक होते रहते है. तीसरा कारण है आपसी सामजस्य न होना. चौथा कारण है बेगारी और भुखमरी. पांचवा कारण है जनसंख्या का विस्फोट होना, नीतियों में असमानता, सफेद पोश भी इसे बढ़ावा दे रहे है. इसके निवारण के लिए निम्न बिन्दुओं पर गौर करना होगा-

० शिक्षित लोगो को योग्यतानुसार कार्य का मिलना और उचित वेतन व्यवस्था होनी चाहिए.

०पूरे विश्व में भाईचारा स्थापित करना.

० अशिक्षित लोगों को शिक्षित बनाने के लिए व सही दिशा देने के लिए ठोस कदम पूरे विश्व को उठाना चाहिए.

० सभी देश वासियों के लिए एक समान नीति, नियम होना चाहिए.

० बेगारी और भूखमरी को दूर करने लिए कुटीर उद्योगों की व्यवस्था करवाना तथा उसके लिए सहायता प्रदाना करना.

० जनसंख्या को काबू करना.

० आतंकवादियों के कठोरदण्ड का प्राविधान करना.

० सफेदपोशो के लिए विशेष गुप्तचर बनाने चाहिए उनके विशेष नियोजित नियम कानून बनाये जायें.

+++++++++++++++++++++++++++++++++

वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे

कविवर रामधारी सिंह दिनकर की ये पंक्तिया हमें प्रेरित कर सकती है कि आतंकवाद से छुटकारा दिलाने में. आज मनुष्यता का ही त्याग कर दिया है मानव समाज ने. अलगाववाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, धार्मिक कट्टरता, भाषावाद जैसे अनेक संकुचित आधारों के सहारे आतंकवाद पनप रहा है. **कु० अनुपम तिवारी,** बरहज, देवरिया

+++++++++++++++++++++++++++++++++

द्विग्भ्रमित युवको को विश्वास में लाया जाए

१. द्विग्भ्रमित युवको को विश्वास में लाया जाए तथा उनमें परिश्रम के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न की जाए.

२. देश द्रोहियों के विरुद्ध कठोर दण्ड की व्यवस्था की जाए.

३. अधिकारियों को व्यापक अधिकार दिये जाये जिससे वह स्वतः निर्णय लेने में समर्थ हो.

४. सभी वर्ग में प्रतिनिधियों, समाजसेवियों ,शिक्षकों द्वारा साा एवं गोष्ठियों का अयोजन किया जाए.

५. सद्भाव यात्राओं का आयोजन

६. धर्म को राजनीति से अलग करके

७. आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले देशो के विरुद्ध जनमत तैयार करना.

८.नैतिकता को बढ़ावा देना

६. आतंकवादियों के शरणार्थियों को देशद्रोह का मुकदमा लगाकर दण्डित किया जाए.

+++++++++++++++++++++++++++++++++

रिया साहनी, कटिहार

हम जब बुराई करते है तो हमें रोकना बेहद आवश्यक होता है, लेकिन अगर हमारी बुराई बढ़ जाये और हमें कोई सजा नहीं मिले तो हम बिगड़ जाते है. वही बात आतंकवाद में भी है. जब छोटी-मोटी बुराइयों को हमारी सरकार नजर अंदाज कर देती है तब जन्म लेता है 'आतंकवाद'. आतंकवाद को रोकने के लिए इन्हें सजा-ए-मौत या उम्र कैद देनी चाहिए. ताकि वारदाते कहने के पहले कोई लाखों बार सोचे. आतंकवाद अत्याचार से भी पनपता है जैसे जातिवाद, अमीरी-गरीबी, धर्मवाद, सम्प्रदायवाद, बेरोजगारी आदि.

+++++++++++++++++++++++++++++++++

आतंकवाद आज देश का एक कोढ़ बन गया है. हम सभी सोचते है कि आतंकवादी घटनाएं क्यों हो रही है. क्या हो इसका निवारण. कैसे मिले इस कोढ से छुटकारा. इस सबंधा में आप सभी से विचार आमंत्रित है. अच्छे विचारों को पुरस्कृत किया जाएगा.

पंचारिया को 'कलम-कलाधर'

स्थानीय सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक, हिन्दी सेवी, अनुवादक श्री एस.के.पंचारिया 'गुरुजी' को ३० मार्च २००८ को अ.भा.साहित्य संगम, उदयपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान २००८ के अन्तर्गत उनकी हिन्दी सेवा एवं साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए, उन्हें 'कलम कलाधर' की मानद सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया.

श्री पंचारिया इसके पूर्व भी देश की विभिन्न संस्थाओं से सम्मानित एवं पुरस्कृत हो चुके है.

उक्त सम्मान के लिए उनके हिन्दी प्रेमी हितैषियों एवम शिक्षक साहित्यकारों ने उनका हार्दिक अभिनंदन किया है.

खुलासा

अरुणाचल:किस ओर

✍ **संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी**

अरुणाचल में एक भी हिन्दी चैनल वहॉ दिखाई/सुनाई नहीं दे रहे है. इसका मूल कारण है चीन द्वारा अत्याधुनिक व अधिक क्षमता का ट्रांसमीटर लगाया जाना. ट्रांसमीटर की कमी के कारण यहॉ मजबूरी में चीनी चैनल सुनने पड़ते है.

चीन अरुणाचल को विवादग्रस्त मानता रहा है. वह समय–समय पर अरुणाचल को अपने नक्शे में प्रदर्शित भी करता रहता है.

चीन अरुणाचल के निवासियों को यह कह कर कि ये हमारे ही नागरिक है वीसा जारी करने से भी इन्कार करता रहा है.

अरुणाचल के मानवाधिकार कार्यकर्ता श्री ॲथली के हवाले से बताया गया है कि जब से चीन ने अरुणाचल के भू-भाग पर अपना दावा जताया है तब से एक भी हिन्दी चैनल वहॉ दिखाई/सुनाई नहीं दे रहा और इसका मूल कारण है चीन द्वारा अत्याधुनिक व अधिक क्षमता का ट्रांसमीटर लगाया जाना जिसके मुकाबले हमारा ट्रंासमीटर बहुत कमजोर पड़ता है. ट्रांसमीटर की कमी के कारण यहॉ के निवासियों को मजबूरी में चीनी चैनल सुनने पड़ते है जो धीरे-धीरे यहॉ की जनता में आत्मसात होते जा रहे है. परिणामस्वरुप अरुणाचलवासी चीनी सिखाये जाने की मॉग करते हैं तो उसमें उनका कोई दोष नहीं है. यह तो अपनी ही लापरवाही व उपेक्षा का परिणाम है.

८ मई के कुछ समाचार पत्रों में पश्चिम अरुणाचल के सांसद श्री किरेन रिजीजू के हवाले से समाचार था कि चीनी सेना अरुणाचल में २० किलोमीटर अन्दर घुस आई है. चीनी सेना ने हमारे ही आउटपोस्ट पर कब्जा कर लिया है. चीन अरुणाचल की विवादग्रस्त मानता रहा है. वह समय-समय पर अरुणाचल को अपने नक्शे में प्रदर्शित भी करता रहता है. यहॉ तक कि चीन अरुणाचल के निवासियों को यह कह कर कि ये हमारे ही नागरिक है वीसा जारी करने से भी इन्कार करता रहा है. यदि ये सभी तथ्य सही है जिनके सही होने की ही अधिक संभावना है क्योंकि सरकार ने इनका कहीं खण्डन नहीं किया है. तो वास्तव में हम अपने राष्ट्रधर्म का पालन कहॉ तक कर रहे है? यह विचारणीय व संदिग्ध है.

अरुणाचल पर एक दृष्टिगत करें तो पाते है कि १९६२ से पूर्व तक यह क्षेत्र पूर्वोत्तर सीमान्त एजेन्सी (नार्थ-ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी-नेफा) के नाम से जाना जाता था. इसके पश्चिम में भूटान, उत्तर और उत्तर पूर्व में तिब्बत (जो अब चीन का ही हिस्सा है.) और चीन, पूर्व में म्यामांर और दक्षिण में नागालैण्ड और असम है. यह राज्य पहाड़ी और अर्द्ध पहाड़ी क्षेत्र में है और पहाड़ियों की ढलान असम के मैदानी भाग की ओर है. इस क्षेत्र के सामरिक महत्व के कारण १९६५ तक यहॉ के प्रशासन की देखभाल विदेश मंत्रालय करता था. उसके बाद असम के राज्यपाल के माध्यम से यहॉ का प्रशासन गृहमंत्रालय के अधीन रहा. सन् १९७२ में इस क्षेत्र को केन्द्र शासित प्रदेश बनाकर इसे अरुणाचल प्रदेश का नाम दिया गया. २० फरवरी १९८७ को यह भारत का २४वॉ राज्य बना.

इस प्रदेश में १४ जिले है. यहॉ की जनसंख्या १०९११७ तथा भौगोलिक क्षेत्रफल ८३७४३ वर्ग किलोमीटर है. जनसंख्या की दृष्टि से भारत में यह राज्य २७वें स्थान है. जनसंख्या की सघनता को देखते हुए यह राज्य सबसे अन्त में ३५वें स्थान पर है यहॉ २००१ की जनगणना के अनुसार प्रतिवर्ग किलोमीटर १३ व्यक्ति रहते है जो १९९१ में १० थे. साक्षरता दर में यह राज्य कुल ५४.७४ प्रतिशत (महिला ४४०२४ व पुरुष ६४.७) के साथ ३२ वें पायदान पर है. कुल जनसंख्या का लगभग ६४ प्रतिशत अनुसूचित जनजातियां है. विशेष क्षेत्र व जनजाति बाहुल्य के कारण संविधान में इस प्रदेश के लिए विशेष प्रावधान किए गये है.

हमने एक ही जुमला रट रखा है. जहॉ भी बात चलती है उसे दुहरा देते है कि अरुणाचल भारत का अभिन्न अंग है. अरुणाचल के मामले में ही क्यों यही जुमला जम्मू-कश्मीर के मामलें में भी है. सिवाय बयानबाजी के हम क्या करते है? आज तक कहीं दिखता नहीं. यह जुमला दुहराते-दुहराते जम्मू-कश्मीर का भी भू-भाग हमारे कब्जे से निकल गया तथा यह जुमला

दुहराते-दुहराते हम अरुणाचल की भी सुरक्षा की कोई चिन्ता नहीं कर रहे है. यह सर्वस्वीकृत तथ्य है कि देश के लिए मरने की अपेक्षा देश के लिए जीना अधिक प्रभावशाली व आवश्यक है. ठीक उसी प्रकार आक्रमण की स्थिति में तो हम क्या कर पायेंगे जबकि तनावपूर्ण शान्ति काल में ही हमने अपनी सीमाओं को अघोषित शत्रु व घोषित मित्र में भरोसे छोड़ रखा है. हम अरुणाचल को अपना बताते है तो वहॉ श्रेष्ठतम् संरचनात्मक ढॉचा विकसित क्यों नहीं करते? सीमावर्ती प्रदेशों में हमें विशिष्ट सावधानी रखनी चाहिए. वहॉ की जनता से केवल देशभक्ति के नाम पर कुछ भी सहन करने की अपेक्षा करना एकदम अनुचित व अव्यावहारिक है.

संचार किसी भी देश व प्रदेश की रक्त वाहिनी का काम करता है. अरुणाचल प्रदेश एक बहुभाषी राज्य है. यह जनजाति बहुल प्रदेश भी है. यहॉ निशिंग, मोनपा, मिजी, अंका, शेरदुकपेन, अपतानी, तगिन, हिलमिरी, अदी गैलोंग, दिगारु मिशमी, इदु-मिशमी, मिजु मिशमी, खामटी, नोकटे, तंगसा और वाचू सहित अनेक बोलियों का प्रयोग होता है. इन भाषाओं व बोलियों में इतनी भिन्नता है कि एक जनजाति की भाषा दूसरी जनजाति के लिए ही अबोधगम्य है. अतः आपसी सम्पर्क व व्यवहार के लिए यहॉ हिन्दी का ही प्रयोग किया जाता है. यही कारण है कि अरुणाचल प्रदेश हिन्दी भाषी प्रदेशों में गिना जाता है. देश के अन्य क्षेत्रों की तरह हिन्दी भाषी प्रदेश होते हुए भी सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का ही प्रयोग हावी है. वस्तुतः शिक्षा, सूचना, भाषा, रोजगार व मनोरंजन की ओर विशेष्ज्ञ ध्यान देने की आवश्यकता है.

अनुभव कहता है कि किसी भी प्रदेश के लिए किये गये विशेष प्रावधान राष्ट्र के लिए हितकर नहीं रहे है. विशेष प्रावधानों के लिए तर्क यह दिया जाता है कि वहॉ की विशेष संस्कृति व जनजातीयता को बचाने के लिए यह आवश्यक है. विचार करने की बात यह है कि वहॉ के लोगों को जनजातीय ही बनाये रखना हमारा प्रयोजन क्यों है? क्यों नही हम उन्हें श्रेष्ठतम् शिक्षा, संरचनात्मक ढांचा व रोजगार प्रदान कर विकसित कर अपने आपमें पूर्णतः आत्मसात करते? उन्हें अलग-थलग रखने के लिए विशेष प्रावधानों व कानूनों की क्या आवश्यकता है? उन्हें सामान्य भारतीय की तरह अपने आप में आत्मसात करना ही सभी समस्याओं का समाधान है. इसमें समय लग सकता है समस्याएँ भी आयेगीं किन्तु हम उस दिशा में प्रयास तो प्रारंभ करें. पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं. चीनी सेना भारतीय क्षेत्र में बीस किलोमीटर तक अन्दर प्रवेश पा गई बिना किसी संघर्ष के और हमारे ही आउटपोस्ट पर कब्जा कर लिया. हमारा एक भी जवान हताहत नहीं हुआ. हमारे क्षेत्र में हम ही अपने चैनलों को सुन या देख नहीं पाते? और हम कहते है कि अरुणाचल हमारा अभिन्न हिस्सा है. यही स्थिति रही तो अभी नहीं शताब्दियों बाद अरुणाचल हमारा नहीं रह जायेगा. चीन और पाकिस्तान दोनों ने ही हमारे भू-भाग पर कब्जा कर रखा है. दोनों के साथ हमारा सीमा विवाद चल रहा है. चीन अरुणाचल प्रदेश पर अपना अधिकार जताता रहा है. ऐसी स्थिति में सीमावर्ती राज्यों में लापरवाही बर्तना कितना घातक हो सकता है? इस ओर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है. इस ओर न ही सत्ता-पक्षा ध्यान दे रहा है और न ही विपक्ष को इस सबसे कोई मतलब है. मीडिया ने भी इसे कभी मुद्दा नहीं बनाया. कुछ सामाजिक संगठन अवश्य अरुणाचल के नाम पर धन संग्रह करते है किन्तु वहॉ क्या हो रहा है इसके विस्तृत समाचार शेष भारत को प्राप्त नहीं होते.

रजनीगंधा का विमोचन

'रजनीगंधा' हायकू संग्रह साहित्य जगत में नई बयार के झोंके के समान सुखद एवं आल्हादकारी है. यह उदगार वाराणसी से पधारे वरिष्ठ साहित्यकार एवं मुख्य अतिथि पं. उदय शंकर दुबे ने विमोचन के अवसर पर व्यक्त किए. संग्रह का विमोचन प्रकाश चन्द्र नायक जिला परियोजना समन्वयक सर्व शिक्षा अभियान द्वारा किया गया. विशिष्ट अतिथि के रुप में डॉ० कैलाश बिहारी द्विवेदी रहे तथा अध्यक्षता पूर्व विधायक मगन लाल जी गोयल ने की.

लेखक राजीव नामदेव ने कुछ धार्मिक हायकु सुनाए- जाति धरम/भले ही है अनेक/है खुदा एक। लालजी सहाय श्रीवास्तव 'लाल' ने-भूक सतातींतो मालूम होती/कीमती रोटी/ भरा हो पेट/ तो क्या अहमियत/ पायेगी रोटी. शायर ज़फ़रउल्ला खां ने-आज तक समझे नहीं आब की कीमत क्या है। देखना ताले में रक्खेंगे जफ़र पानी को। हरेन्द्रपाल सिंह ने यह गीत सुनाया- जो आसामाजिक रहा वह फक्र से पूजा गया/महफिलों में उनकी ही हम अर्चना करते रहे।

इस अवसर पर अजीत श्रीवास्तव, पं. हरिविष्णु अवस्थी, रामगोपाल रैकवार, सियाराम अहिरवार, भारत विजय बगेरिया, एस.बी.अन्जान, उमाशंकर मिश्र, बी.एल.जैन, विजय कुमार मेहरा ने अपनी रचनाएं पढ़ी.

केचुंए की खाद: वर्मी कंपोस्टिंग

✍एस.के. तिवारी

वर्मीकंपोस्टिंग दो शब्दों से मिलकर बना है-वर्मी तथा कंपोस्टिंग अर्थात कृति-केचुए से तैयार खाद/गांवो, कस्बों तथा शहरों में सभी स्थानों पर प्रतिदिन लगभग ४०० ग्राम ठोस कचरा प्रतिव्यक्ति निकलता है. निश्चित रुप से भविष्य में जनसंख्या की वृद्धि को देखते हुए कचरे के बड़े मात्रा में बढ़ने की संभावना है.

केचुंए सड़े-गले पदार्थो तथा कूड़ा-करकट, फलों के अपशिष्ट फसलों के अवशेष (जिसमें रसोई से निकलने वाले कचरे में बचे हुए खाद्य पदार्थ, अंडे के छिलके, साग-सब्जियों एवं फलों के छिलके, चाय की पत्ती, भूसा, डंठल, बाग-बगीचों में गिरी पत्तियां, फल-फूल इत्यादि शामिल है.) आदि को अहार के रुप में लेकर उसे मिट्टी में पुनः चक्रित करते रहते है. केचुए मिट्टी और कार्वनिक पदार्थो को तोड़ देते है, तत्पश्चात् उन पदार्थो का विघटन आरंभ हो जाता है. केंचुए कार्बनिक पदार्थो पदार्थो को खा जाते है और यह कार्बनिक पदार्थ केचुओं के पाचन-तंत्र से होता हुआ जटिल जैव-रासायनिक प्रक्रियाओं से गुजरता है और मिट्टी की महक वाली सूक्ष्म गोलिकाओं के रुप में बाहर निकाल देता है. कोकून के साथ निकला यह पदार्थ और गैर-पचा हुआ पदार्थ वर्मी पोस्टिंग कहलाता है.

गंदगी नियंत्रण में केंचुए की अपनी अहम भूमिका है. यह रबड़, प्लास्टिक और धातु को छोड़कर लगभग सभी कुछ खा जाता है. गंदगी खाने के बाद केचुआ इसे कार्बनिक खाद के रुप में बाहर निकालता है, जिसमें नाइट्रोजन, फास्फेट, पोटाश, कैल्शियम तथा मैग्नीशियम पर्याप्त मात्रा में होती है. इसमें विटामीन एवंएजाइम होने की भी जानकारी है. बाजार में जो भी पोटाश उपलब्ध है उनके मिश्रण में नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटेशियम की ही मात्रा पायी जाती है तथा शेष पोषण तत्व की मात्र बहुत ही कम या न के बराबर होती है.

एक अध्ययन के अनुसार वर्मी कपोस्ट पोषण तत्व व मान इस प्रकार है

जैविक कार्बन	९.१५-१७.९८ प्रति.
नाइट्रोजन	०.५-१.५प्रति.
फास्फोरस	०.१-०.३ प्रति
सोडियम	०.००६-०.३प्रति
पोटेशियम	०.१५-०.५६ प्रति
तांबा	२.०-९.५पी.पी.एम
जस्ता	५.७-११.५पी.पी.एम
लोहा	२.०-९.३ पी.पी.एम
गंधक	१२८-५४८ पी.पी.एम

घरेलू अपशिष्टों तथा कृषि व्यर्थ पदार्थो से प्लास्टिक, सीसा, कागज, चमड़ा, धातुओं के टुकड़ों को अलग कर लेना चाहिए. घरेलू स्तर पर केंचुए को रसोईघरों तथा बाजारों के कार्बनिक पदार्थो से युक्त कचरें में सीधे डाल सकते है. इसे केचुए पोषक तत्वों तथा विटामिनों से परिपूर्ण वर्मीकंपोस्ट में बदल देगें. इस वर्मीकंपोस्ट को गृह-वाटिका तथा गमलों में प्रयोग करके फलों व फूलों, सब्जियों की उपज को बढ़ाया जा सकता है. रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर वर्मीकंपोस्ट का व्यवसायिक रुप से खेतो में प्रयोग करके फसलों, सब्जियों तथा फलों का उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है.

केचुओं का संवर्धन छाया तथा नम स्थानों में किया जाता है. इनका संवंधन सीमेंट के उथले टैंको, लकड़ी या गत्ते के बक्से या प्लास्टिक के थैले में भी किया जा सकता है. केंचुओं के लिए खाद्य पदार्थ तैयार करने हेतु आरंभिक आधार बनाया जाता है जिसके लिए क्रमशः बालू, मिट्टी, नारियल की जटाओं की परत बिछाई जाती है. उसके बाद रसोई से निकले कचरें को गाय के गोबर में मिलाकर परत बना दी जाती है. इससे केंचुआ के के लिए आहार तैयार हो जाता है. साथ ही नमी भी बनाई रखनी चाहिए. आंरभिक खाद्य पदार्थ के इस्तेमाल के बाद अतिरिक्त पदार्थ डाले जाते है. केंचुए सक्रियतापूर्वक लिए गए आहार का सिर्फ दस-पन्द्रह प्रतिशत अवशोषित करते है और बाकी अलग गोलिकाओं के रुप में वर्मीकास्ट सतह पर बाहर निकालते है. इन गोलिकाओं को किनारे की ओर लेकर एकत्र किया जाता है. इस प्रकार एकत्रित वर्मीकास्ट को रात भर के लिए छोड़ देते है ताकि केचुंए नीचे तली की ओर चले जाए. इस प्रकार ऊपर की परत केचुओं से खाली हो जाती है तब उसे अलग करके हवा से सुखा लेते है. सूखी वर्मीकास्ट को छलनी से छानते है, जिससे कोकून और छोटे केंचुए अलग हो जाए. सुखाई गई वर्मीकास्ट उर्वरक के रुप में इस्तेमाल के लिए तैयार हो जाती है.

इस प्रकार वर्मीकंपोस्टिंग द्वारा हम पर्यावरण को स्वच्छ बना सकते है तथा इस प्रकार तैयार वर्मीकंपोस्ट के इस्तेमाल से उर्वरकों के दुष्प्रभाव को कम कर सकते है. आज के संदर्भ में, प्राकृतिक खेती की आवश्यकता में वर्मीकंपोस्टिंग का विशेष महत्व है, बस जरुरत है इसे व्यवहार में लाने की. उर्वरकों के दुष्प्रभाव अब हमसे छिपे नहीं है. अगर समय रहते चेता नहीं गया तो जैसे हम पहले दूसरों पर निर्भर थे, वहीं फिर होगा.

++++++++++++++++++++

संस्कृति

वस्त्रों में धोती

डॉ० स्वर्ण किरण, नालंदा, बिहार

आज के अनिश्चित फैशन के युग में धोती जैसे अधोवस्त्र का समर्थन, संभव है, हास्योद्रेक का कारण बन जाएं पर धोती का समर्थन अकारण नहीं कहा जा सकता. धोती हमारे राष्ट्र का एक उपयोगी पहनावा है और इससे जो लोग परिचित है वे इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं. वैदिक काल से लेकर अब तक का इतिहास इसके अस्तित्व का, इसके उपयोग को, इसके वैशिष्ट्य का प्रमाण है. यद्यपि धोती का कोई इतिहास नहीं लिखा गया, इस पर कवि अथवा कलाकार का ध्यान नहीं जा पाया, 'वात्स्यायन काम-सूत्र' के चौंसठ, 'प्रबंध कोश' के बहत्तर और 'ललित विस्तर' के छियासी प्रकार के कला-भेदों में धोती से संबद्ध कोई कला भेद सामने नहीं आ पाया, न तो किसी विचारक ने धोती के आलोक में कुछ विचार किया, न भगवान् कृष्ण ने ही 'गीता' में अर्जुन को संबोधित करके यह कहा कि अर्जुन, वस्त्रों में मैं धोती हूँ! वास्तव में, अन्नों में जो महत्व चावल का है, सब्जियों में जो महत्व आलू का है, आवासो में जो महत्व पक्के आवास या अट्टालिका का है, सड़कों में जो महत्व राज मार्ग का है, वस्त्रों में वही महत्व धोती का है. आप कुरता पहनें, न पहनें, गंजी पहनें, न पहनें, धोती के अर्द्ध भाग से कुरते या गंजी का काम चला सकते है. केवल धोती पहन कर आप निस्संकोच बाहर निकल सकते हैं. यों आप प्रश्न उठा सकते हैं कि धोती के अभाव में नग्न रुप में, हम बाहर निकल सकते है या नहीं?

कहते है 'धौति' शब्द-हठयोग की एक क्रिया विशेष, जिसमें कपड़े की चार अंगुल चौड़ी एवं पंद्रह हाथ लंबी गीली पट्टी निगलते और फिर बाहर निकालते हैं-से संबद्ध है पर निश्चय ही हठयोग की क्रिया की तरह धोती तंग नहीं करती, परीक्षा नहीं लेती. हठयोग की धौति क्रिया कठिन है और कभी-कभी, अच्छे-अच्दे साधकों की भी धोती ढीली कर देती है, यो साधक धोती की जगह लंगोटा या लंगोटी किंवा लिगोंट से काम चलाना उचित समझते है. धोती भी लिंगाच्छादक है पर निश्चय ही धोती की तुलना हम लंगोटा या लंगोटी से नहीं कर सकते. जांघिया या लुंगी से भी नहीं. यद्यपि जॉघियां कदाचित, संस्कृति जंघीय से निकला हुआ शब्द है जिसका अर्थ 'जॉघ संबंधी' हो सकता है. वह जॉघ को ढंकता है-स्वरुप प्रकाश न्याय से लिंग भी ढंक ही जाता है. लुंगी तो लिंगी या लिंगीय का मौन संकेत देती ही है जिसका स्पष्ट तात्पर्य लिंग के आच्छादन से है पर लॅगोटा, लॅगोटी, जॉघियां और विशेष स्थिति में लुंगी भी वह काम नहीं दे सकते है जो काम धोती देता है बल्कि वे धोती के सहायक है. धोती के साथ भी रह सकते है, धोती बिना भी. किंतु धोती 'आउट बियर' बाहरी पहनावे का काम करती है, जबकि ये 'अंडरवियर'-भीतरी पहनावे का काम करते है. हम लंगोटा, लंगोटी, जॉघियां आदि पहन कर सदैव नहीं रह सकते, बल्कि इसके स्थान पर धोती का प्रयोग सदैव कर सकते है. धोती इनकी स्थानापन्न भी है, स्वतंत्र भी. धोती इनकी तरह मुड़ाव या सिकुड़ाव की कायल नहीं, यह फैलाव पसंद चीज है. धोति की पट्टी चौड़ी कम, लंबी अधिक की तरह, धोती भी कम चौड़ी और अधिक लंबी होती है, इसकी चौड़ाई और लंबाई विचार की अपेक्षा रखती है.

- आज के फैशन के युग में धोती जैसे अधोवस्त्र का समर्थन, हास्योद्रेक का कारण बन जाएं पर धोती का समर्थन अकारण नहीं कहा जा सकता. धोती हमारे राष्ट्र का एक उपयोगी पहनावा है
- अन्नों में जो महत्व चावल का है, सब्जियों में जो महत्व आलू का है, आवासो में जो महत्व पक्के आवास या अट्टालिका का है, सड़कों में जो महत्व राज मार्ग का है, वस्त्रों में वही महत्व धोती का है.
- पश्चिमी दृष्टि से भले इसको उपहासास्पद माना जाए और इसे फुर्तीलापन का विरोध बतलाया जाए पर वास्तव में, यह उपहासास्पद नहीं है न ही फुर्तीलेपन का विरोधी है.

धोती शब्द को यदि धाटी से निःसृत माना जाए जिसकी व्युत्पत्ति है-धन्+अच्ः निपातुनात् नूस्य टः गौरादित्वात ङीष् तो धोती का अर्थ हुआ घाव उत्पन्न करने वाला माध्यम, हालांकि इसके पर्याय के रुप में चोर वस्त्र तथा कौपीन दिये है, चीर वस्त्र अर्थात् वृक्ष अथवा कटिदेश का चयन करने वाला-चिनोति आवृणोति वृक्षं कटिदेशादिकं वा कौपीन अर्थात् कूप पतन में सहायता करने वाला-कूपपतन महंतीनि. धोती धान उत्पन्न करने में, धन पैदा करने में, कवि देश का चयन करने में या कूप-कुएं में उतरने में या कुएँ से पानी खींचने में सहायता करती है. कुछ लोग चीवर के अर्थ में धोती का व्यवहार करते है जो बौद्ध भिक्षुओं का मुख्य वस्त्र है. मोनियर विलियम साहब ने धोती का संबंध धट से माना है जिसका अर्थ है वह वस्त्र खंड जो

गुप्तांगो के ऊपर पहना जाए. पश्चिमी दृष्टि से भले इसको उपहासास्पद माना जाए और इसे फुर्तीलापन का विरोध बतलाया जाए पर वास्तव में, यह उपहासास्पद नहीं है न ही फुर्तीलेपन का विरोधी है. आप पानी में, कीचड़ में, सूखे में सर्वत्र धोती पहनकर आसानी से जा सकते है. पायजामा या फुलपैंट के जो समर्थक है वह भी धोतीधारी की तुलना में ठहर नहीं सकते. घुटने भर पानी या कीचड़ के छीटों से ये गंदे भी हो जाए पर धोतीधारण में यह सुविधा प्रत्यक्ष है कि उस पर पानी या कीचड़ के छींटे नहीं पड़ सकते है.

धोती भारतीय संस्कृति का द्योतक है; पायजामा अरबी, फारसी या इस्लामी संस्कृति का बोधक है. फुलपैंट-पतलून, पतलून अंग्रेजी या ईसाई संस्कृति का संकेतक है. ये सभी अधोवस्त्र है, सबका काम कमर से लेकर टखने तक को ढँकना है, सभी गुप्तांगो के रक्षक है, पर धोती भारतीय हिंदू संस्कृति के भक्तों का प्रिय वस्त्र है, पायजामा इस्लामी संस्कृति के तथाकथित भक्तों का और पतलून अंग्रेजो या ईसाई संस्कृति के समर्थकों का. धोती वेदकालीन अधोवस्त्र है, भोजपत्र के बाद का आविष्कार, पायजामा कुराना कालीन आंटककटि आच्छादक और पतलून बाइबिल कालीन आंटककटि रक्षक. धोती पंडित है, पायजामा मुल्ला या मौलवी और पतलून पादरी साहब. धोती मुक्ति है, पायजामा फना है, पतलून सालवेशन है. धोती केसरिया भात है. पायजामा पुलाव है, पतलून राइस केक. धोती से पायजामा या पतलून का निर्माण संभव है. पायजामा या पतलून को धोती का रुप देना संभव नहीं. धोती, पायजामे या पतलून में मूलाधार या मूल तत्व के रुप में उपस्थित है पर धोती में पायजामें या पतलून के अस्तित्व की कल्पना क्लिष्ट कल्पना है. धोती फैशन-विमुक्त है, पायजामा, पतलून फैशन ग्रस्त. पायजामा के सुथना, तमान, इजार, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, पेशावरी नेपाली आदि अनेक भेद भ्रमोत्पादक है, धोती के भेद भ्रमोत्पादक नहीं, चाहें फैला कर पहनिए, समेट कर पहनिए या चुन्नट दे कर पहनिए, पतलून की तरह इसमें बंधन भी नहीं किया तो टाइट पहनिए या लूज.

लोगा का कथन है कि धोती युद्ध क्षेत्र के लिए उपयुक्त नहीं और धोती पहन कर जाने वाले सैनिक विजय श्री का कदापि वरण नहीं कर सकते, पर पायजामा या पतलून ही कौन उपयोगी है? इब्सन महोदय का कहना है कि आपको कभी भी स्वतंत्रता और सत्य के लड़ाई में जाते समय सबसे अच्छा पायजामा या पतलून नहीं पहनना चाहिए. मेरा विचार है कि पायजामा या पतलून के स्थान पर, धोती का उपयोग युद्ध क्षेत्र के लिए बाधक नहीं है. धोती को, कांछे की तरह पहनकर युद्ध में विजयश्री का वरण किया जा सकता है.

धोती अनेकानेक सूतों का समवाय है अर्थात् विविध खड़ें और पड़ें सूतों का एकत्व, धोती का रुप धारण करता है. अतः धोती अनेकत्व में एकत्व का संकेतक है. हम धोती के स्थान पर ज्यों-त्यों पायजामें अथवा पतलून-फुलपैंट का प्रयोग करते है अनेकत्व में एकत्व के अनुव दूर होते चले जाते है. शायद पश्चिमी सभ्यता के हावी होने का परिणाम है हम अपने स्व को भूलते जाते है, स्व में निहित शक्ति पर से हमारा ध्यान हटता जाता है, हम अति उपयोगी पदार्थ के बदले अल्प उपयोगी पदार्थ का सेवन करते है. धोती राष्ट्रीय एकता का संवाहक है. धोती विविध कार्यो में हाथ बंटाती थी. पहनना हो, ओढ़ना हो, कुछ खाना या ले जाना हो, फल-फूल रखना हो इत्यादि सब धोती या धोती के टुकड़े से संभव हो जाता था. आज हम निश्चय ही बहुत आगे बढ़ आये है और विज्ञान ने अधिकाधिक सुविधाएं जुटायी है कि प्रत्येक कार्य के लिए अलग-अलग वस्त्र, अलग-अलग साधन, अलग-अलम माध्यम. हम दिन में दूसरी धोती या लूंगी या जॉघियां या पैंट पहनते है, टहलने के समय दूसरे वस्त्र पहनते है, खेलने के समय दूसरे वस्त्र पहनते है. मतलब यह कि सुविधाएं बढ़ी है तो उलझने भी काफी बढ़ गयी है, युग के विकास के साथ-साथ हमारा एकत्व खंडित होता चला जा रहा है.

कहावत है कमाये धोती वाला, खाये टोपी वाला. वस्तुतः यहाँ टोपी वाले के माध्यम से बुद्धिमान शोषक पर व्यंग्य है, धोती वाल श्रमिक, निःस्व, सर्वहारा, काम-काजू व्यक्ति का प्रतीक है. धोती सचमुच शोषण नहीं सिखलाती, श्रम करने की प्रेरणा देती है, काम करने से देह चुराने की बात नहीं कहती, काम करने में अपने को अर्पित कर देने की बात कहती है, छल-कपट करने की नहीं बतलाती, छल-कपट से दूर रहने ही सलाह देती है. इसमें खुलापन है, इसके उपयोग में सुविधा है. इसे अनेक रुप में हम काम में ला सकते है. फैशन के रुप में अनेक नये-नये पहनावे हमारे सामने उपस्थित हो पर धोती का अपना महत्व है इसको विस्मृत करना संभव नहीं.

निबंध संग्रहः बकरी पाती खात है
प्रकाशकः मिथिलेश प्रकाशन, सोहसराय, नालंदा, ८०३११८, बिहार
मूल्यः १५

उपर्युक्त निबंध इसी संग्रह से ७ निबंधो बकरी पाती खात है, भेड़ा, ऊँट, पंछी में कौवा, चूहे से सीखो शेब-ए-मर्दागनी कोई, वस्त्रों में धोती, ॲगना-ॲगना मोंह में से एक है. वैसे संग्रह के सभी निबंध चिरपरिचित विषयों को संजोये हुए है.

भ्रष्टाचार का वाईरस

✍डॉ. सुमि ओम शर्मा 'तापसी', मुम्बई

मानव मन इतना स्नेह शून्य कैसे हो गया? कुछ संवेदनशील मनुष्य भी पैसे की चमक दमक से अन्धे हो जीवित-मृत अवस्था में पहुँच गये है-मृतक समान इसलिये कि चारों तरफ का हाहाकार भी उन्हें कुछ करने की विवश नहीं कर पाता है-अपने पास जरुरत से ज्यादा है और किसी के पास ज़रुरत भर भी नहीं. ये कैसा मानव समाज हमने मिलजुल कर बनाया है. काश! जो कर सकते है वो सचेत हो एक नया ढॉचा बनायें, जिसमें हर भारत-वासी के सिर पर छत हो और कोई भी भूखा ना सोये. जैसे सूरज, चन्द्रमा, वायु, वर्षा, सागर, धारती, वनस्पति, चरिन्दे और परिन्दे कोई भेदभाव नहीं करते वैसे ही मनुष्य मन भी विशाल बने, समस्त सृष्टि को अपना परिवार समझे, तभी ये पृथ्वी और पृथ्वीवासी स्वर्णायुग की ओर कदम बढ़ायेंगें.

हर मानव अनकट डाईमण्ड है, उसे वो जैाहरी की नज़र चाहिये जो उसे तराश अनमोल रतन बना दे. अपनी जीवन में यदि दस करोड़ भारतीय भी ये शपथ ले लें कि हमें अपने जीवन काल में जब भी सुयोग मिले, पॉच लोागों को गरीबी, अशिक्षा, हिंसात्मक प्रवृत्ति, नशा, झूठ फरेब और नकरात्मक सोच की दलदल से निकाल उसे सही दिशा दिखानी हे..थामना है कस कर उसका हाथ और साथ साथ सहारा दे उसे सही दिशा दिखानी है. थामना है हाथ और साथ देकर उसे एक अच्छा इन्सान बनाना है जो अपने परिवार का सहारा बन सके, अच्छा बेटा, अच्छा भाई, अच्छा पति और एक जिम्मेदार पिता बन राष्ट्र की सुदृढ़ नींव का पत्थर बनने का गौरव प्राप्त करे. ऐसे अच्छे समझदार १० करोड़ नागरिक दूसरों के पथ प्रर्दशक और शाइनिंग इण्डिया के तारे बन जायेंगें.

देश को खोखला बनाने की सबसे बड़ी दीमक लग चुकी है. ये है भ्रष्टाचार का वाईरस जो एडस जैसी लाइलाज बीमारी से भी ज्यादा खतरनाक है. एड्स का जीवाणु शरीर के सफेद कणों को नष्ट करके मनुष्य की प्रतिरोधक शक्ति कम करके, हर तरह के विषैले जीवाणुओं और किटाणुओं को आमन्त्रित करता है लेकिन भ्रष्टाचार का जीवाणु तो मन को जर्जर कर देता है..विचार करने लायक ही नहीं छोड़ता, विवेक बुद्धि पर लोभवृति छाने से मनुष्य को समूल नष्ट कर देता है.

हमारे देशवासियों के मन संक्रमित हो चुके है. यदि ये रोग देश की रक्षा करने वाले वीरों को लग गया तो हम कहीं के ना रहेंगे. रीढ़ की हड्डी टूटने से जैसे मनुष्य विकलांग और असहाय हो जाता है ऐसे ही हम भारतीय जल्दी ही विदेशी ताकतों के गुलाम बन जायेंगें.

आज की मार्डन माताएं यदि बच्चों में सद्गुण का बीज रोपित नहीं कर पाती है तो ये कार्य स्कूल के गुरुजनों को उठाना है. पाठयक्रम में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने की नीति अपनानी है. बच्चों की जड़ों में ही इसके प्रति नफरत को सींचना है ताकि बच्चे अपने पिता को कह सके, हमें हराम की कमाई की रोटी नहीं चाहिए. इससे नयी पौध देश का सही मायने में नव निर्माण करेगी.

'अंधविश्वास का रंग' कृति हेतु रचनायें आमंत्रित

डॉ. गिरधर शर्मा के संपादन में प्रज्ञा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित ग्रंथाकार कृति 'अंधविश्वास का रंग' हेतु विद्वान लेखक, साहित्यकार, पत्रकार तथा संस्थाओं से लेख सादर आमंत्रित है. लेख में निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दे:

क्या सचमुच में विश्वास अंधा और श्रद्धा अंधी है? या अंधविश्वास-अंधश्रद्धा मात्र विद्वता प्रदर्शन अस्त्र मात्र है. अंधविश्वास किसको कहते है? उदाहरण के साथ लिखें. जो भी व्यक्ति 'अंधविश्वास के अंधकार को चीरना है.' दूर भगाना है कहते हैं. क्या वे अपना अंधविश्वास दूर कर चुके है? किस प्रकार दूर किया गया? क्या अंधविश्वास जाति विशेष, धर्म विशेष, या व्यक्ति विशेष पर ही लागू होता है? (जैसा कि देखने में आता है.) या सभी के लिए है. इसके लिए कोई कानून बना हो? या शासन की ओर से कोई कार्यवाही हुई हो? तो उसका उल्लेख अवश्य किया जाय. किसी घटना विशेष को अंधविश्वास घोषित क्यों किया गया? उसका विस्तृत विवरण. किसी अन्य विद्वान के विचार को प्रस्तोता के रुप में आप प्रेषित कर सकते हैं लेकिन उनका यह विचार अवश्य लिखें कि वे खुद अंधविश्वासी हैं या नहीं?

सारगर्भित तथा प्रकाशन योग्य लेख के लिए लेखक को दो सौ रु. सम्मान राशि प्रेषित की जाएगी तथा सर्वश्रेष्ठ लेख को ११०० रुपये विशेष सम्मान दस अन्य श्रेष्ठ को यथोचित सम्मान प्रदान किया जाएगा. लेख एवं विचार प्रज्ञा तंत्र कार्यालय वेदमाता गायत्री कुटीर सोनगंगा कॉलोनी, सीपत रोड, बिलासपुर, छ. ग. के पते पर भेजें.

मिलावट का जहर

हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उ०प्र.

व्यक्ति शाकाहारी हो याा मांसाहारी शुद्ध वस्तु खाना ही पसन्द करता है. भले ही कीमत कुछ भी देनी पड़े और इस शुद्धता को प्राप्त करने के लिए वह जगह-जगह भटकता है. पता लगाने का प्रयास करता है कि कौन सी वस्तु कहॉ पर शुद्ध मिलती है और उसे खरीदने पहुँच जाता है. और जिसका नाम शुद्ध वस्तुऐं उपलब्ध कराने की श्रेणी में आ जाता है उसका महत्व बढ़ जाता है और वह वस्तु जिसकी शुद्धता की वह गारण्टी होता है उसकी आपूर्ति कम पड़ जाती है. किन्तु धीरे-धीरे जैसे-जैसे उस व्यक्ति का नाम बढ़ता है तैसे-तैसे शुद्धता खत्म होती जाती है. उदाहरण के रुप में एक दूध की दुकान पर शुद्ध दूध मिलने की गारन्टी है. शुद्धता की जांच दुकानदार दूध का मावा बनाकर करता है. धीरे-धीरे शुद्धता का लेबिल लग जाने के कारण उसके दूध की मांग इतनी बढ़ जाती है कि मावा करने लायक दूध ही नहीं बचता और जो भैंस पालक उसके यहॉ दूध लेकर आते है. वह जब देखते है कि मावा नहीं किया रहा, शुद्धता की जांच नहीं हो रही तो वह धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा अशुद्ध होना आरम्भ कर देते है. मिलावट करने वाला व्यक्ति यह नहीं सोचता कि यह मिलावट उसे या उसके परिवार को भी हानिकारक हो सकती है. वह तो बस करोड़पति होने के चक्कर में मिलावट करता रहता है. वर्तमान में जो छात्र-छात्राएं अथवा परिवार आत्महत्या कर रहे है. परिवार के परिवार परिस्थितियों से लड़ने के स्थान पर आत्महत्या अपना रहे है.

मिलावटी दूध का कारोबार अरबों रुपये के हिसाब से देश में फैला हुआ है. सिन्थैटिक दूध पता नहीं क्या-क्या डालकर बनाया जाता है लेकिन सुनने में आया है कि डिटरजेंट, यूरिया, अरारोट और दूध का पाउडर आदि मिलाकर यह सिन्थैटिक दूध बनाया जाता है जो जहर का काम करता है. लेकिन खूब पिया जा रहा है. आज बहुत बड़ी मात्रा में इस दूध की खपत हो रही है. गॉवों से लाखों रुपये रोज का दूध शहर में आता है. प्रशासन को यह देखने की फुरसत नहीं है कि यह जो दूध गॉव से आ रहा है इसका स्रोत क्या है. कितनी भैंसे, कितनी गाय, कितना-कितना दूध देने वाली गॉव में आ गयी है जिनका दूध इस प्रकार से शहर में लाया जा रहा है. जब नकली दूध की फैक्ट्री पकड़ी जाती है तब कुछ चींख पुकार मचती है. लेकिन वाह-रे भ्रष्टाचार सारा मामला दब जाता है. इस मिलावटी दूध के पीने से पुष्टि नहीं होती, स्वास्थ्य नहीं बनता बल्कि कभी-कभी एक गिलास दूध ही मृत्यु का कारण बन जाता है.

इसी सिन्थैटिक दूध से बनाया हुआ बनावटी मावा करोड़ों की तादाद में एक कोल्ड स्टोरेज में रखा हुआ पाया गया है. मावा बनाने की फैक्ट्री पकड़ी गयी है. लेकिन कुछ दिन बाद मामला दब जायेगा और मिलावटी मावा बनाने वाले पकड़ में नहीं आयेंगे और जो पकड़े जायेंगे वह येन-केन प्रकारेण छूट जायेंगें. कोई यह जानने को तत्पर नहीं है कि लाखो टन मावा देश में कहॉ से पैदा हो रहा है. जबकि लोगों ने गाय-भैंस पालने बन्द कर दिये है. दूध और मावे की खपत और उसकी आपूर्ति का स्रोत यदि खंगाला जाये तो बहुत सी नयी बातें पकड़ में आ सकती है.

नकली देसी घी बनाने का जो तरीका दूरदर्शन पर दिखाया गया है वह तो और भी चौकाने वाला है. मरे हुए जानवरों की हड्डी इक्ट्ठी करके उन्हें पका कर कुछ कैमिकल डालकर नकली घी तैयार किया जा रहा है. मरे हुए जानवरों की चर्बी के मिश्रण से नकली देसी घी बनाया जा रहा है. जिसमें खुशबू डाल दी जाती है और नकली देसी घी तैयार हो जाता है. यह ६०-७० रुपये प्रति किलो की दर से तैयार वस्तु शुद्ध देसी घी के नाम से १५० रुपये प्रति किलो के भाव तक बिक जाता है. यह घी एक प्रकार से ज़हर का काम करता है. लेकिन धीरे-धीरे हम ज़हर को पचाने के आदि हो गये है. शरीर का और आत्मा का क्षरण होता रहता है और हम धीरे-धीरे मृत्यु की ओर खिसकते रहते है. जानते-बूझते हुए भी कि यही मिलावटी घी कभी हमारे घर भी पकवान बनाने के लिए आ सकता है. हम मिलावटी घी के निर्माण में लगे हुए है.

मरीजों को अक्सर डाक्टर हरी सब्जियां और फल खाने के लिए कहते है. दूरदर्शन के माध्यम से ज्ञात हुआ कि आम, मौसमी, केला, लोकी, तोरी आदि पकाने के लिए जो घातक प्रयोग किये जा रहे है. वह विष से भी भयंकर है. सब्जी और फलों में जो इंजेक्शन लगाये जा रहे है वह प्रतिबंधित है. लोकी, तोरी की बेल में इंजेक्शन लगाकर आकार को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है. यह इंजेक्शन जो इस प्रकार से आकार को बढ़ाने के काम में लाया जा रहा है. वह प्रतिबंधित है लेकिन इसका खुले आम प्रयोग हो रहा है. फलों को पकाने के लिए जो इंजेक्शन दिये जा रहे है वह पूर्ण रुप से घातक और विषैले है. लेकिन एक बार इस ओर बढ़े हुए हमारे हाथ

रुकने का नाम नहीं ले रहे है.

पहले कहा जाता था कि अण्डे और मेवा में किसी प्रकार की मिलावट नहीं होती लेकिन अब मुर्गी के अण्डे के स्थान पर कछुए और बत्तख के अण्डे भेड़ दिया जाते है. मेवा में भी तरह-तरह की मिलावटे की जा रही है. सुपारी जिसका प्रयोग पान में होता है उसमें भी खजूर और छुआरे की गुठली काटकर मिला दी जाती है. मिलावट करने के इतने घर है और इतने तरीके इजाद हो गये है कि प्रत्येक व्यक्ति मिलावट कर रहा है प्रत्येक व्यक्ति मिलावट में लिप्त है. बातें मिलावटी और बनावटी है. आचरण मिलावटी और बनावटी है. बस हम बनावटी आवरण ओढे हुए मिलावटी जिन्दगी जी रहे है और प्रत्येक क्षण विष पी रहे है. पिछले दिनों सुना था कि चाय में पुराने चमड़े का बुरादा मिला दिया जाता है जिससे रंग अच्छा आता है. जो पान का गुटखा हम खाते है उसमें दो रुपये में शुद्ध तम्बाकू और शुद्ध छाली मिलना सम्भव ही नहीं है. लेकिन हम एक रुपये का राजदरबार खरीदते है उसमें तम्बाकू के नाम पर और छाली के नाम पर क्या होता है यह हमें भी पता नहीं है. कुछ समय पहले छिपकली की हड्डियों के प्रयोग की बात सामने आयी थी. नकली शराब बनाने में छिपकली, सांप, छछुंदर तथा कुत्ता मारने की दवा मिलाने की बात सुनी गयी थी. जिस शराब को पीकर लोग मर जाते है. वह शराब किन मिलावटी वस्तुओं से बनाई जाती है. उनमें किस प्रकार के विष का प्रयोग किया जाता है. यह तो बनाने वाले ही जाने लेकिन इस मिलावट के व्यापार ने सैकड़ों जिन्दगीयों को लील लिया है. यह स्पष्ट है.

गरम मसाले में घोड़े की लीद का होना पकड़ा गया था दूध की रबड़ी में ब्लाटिंग पेपर मिलते रहते है. देसी घी में जानवरों की चर्बी पायी जाती है. किस-किस वस्तु में किस-किस प्रकार से मिलावट हो रही है यह हमारा गुप्तचर विभाग पता कर सकता है लेकिन भ्रष्टाचार की जय हो कोई भी पहल नहीं करना चाहता. माफियाओं के हाथ में है मिलावट का कारोबार और माफियाओं के हाथ इतने लम्बे है कि कोई भी उनसे टकराने की प्रयास नहीं कर सकता.

सोना-चॉदी में मिलावट सुनने में आती थी. और यह कि आम बात थी कि सोने का आभूषण बनवाने पर उसमें मिलावट कर दी जाती थी. बड़ा धोखा देने के लिए वस्तुओं पर सोने का पालिश करके प्रस्तुत कर दिया जाता था. इसी प्रकार से चॉदी में गिलट का प्रयोग स्वाभाविक रुप से होता था. किन्तु इन चीजों से केवल आर्थिक हानि थी. जान जाने की कोई बात नहीं थी. लेकिन अब खाने के मसालों में मिलावट चाय की पत्ती में मिलावट, दूध में मिलावट प्राण घातक है. मॉस में मिलावट आम बात हो गयी है. आटे में, चावल में, दालों में, यहॉ तक की बुरे आदि में भी मिलावट विद्यमान है. ऐसा लगता है कि जैसे हम बिना मिलावट के रह ही नहीं सकते. अथवा शुद्ध वस्तुओं को खाने और पचाने की हमारी शक्ति समाप्त हो गयी है और हम केवल मिलावटी वस्तुओं के प्रयोग करने पर ही जीवित रह सकते है.

बीमार मनुष्य को ठीक करने के लिए दवा की आवश्यकता होती है लेकिन जब पता चलता है कि दवा में भी मिलावट हो रही है और नकली दवाऍ बन रही है. तो मरीज दवा खाने से ही इंकार कर देता है क्योंकि यह पता नहीं कि किस दवा को खाकर उसका क्या असर होगा और उसके प्राण बचेंगे या रहेंगें. नकली दवाओं की फैक्ट्रीयां पकड़ी जा रही है. नेताओं के पुत्र इसमें सम्मिलित है. दवाओं के मनमाने दाम लिये जा रहे है और यही हाल इंजेक्शन का है. कौन सा इंजेक्शन सही है कौन सा मिलावटी है और कौन सा बनावटी है इसका पता चलना असम्भव है. परिणाम क्या होता है मिलावटी इंजेक्शन लगाते ही व्यक्ति परलोकवासी हो जाता है. और डाक्टर का अथवा दवा विक्रेता का कुछ नहीं बिगड़ता. वर्तमान परिस्थितियां इतनी विकट हो गयी है कि मिलावट का ज़हर प्रत्येक वस्तु में घुसा हुआ है. मिठाई में, दवाई में सभी में मिलावट विद्यमान है और यह मिलावट प्राण घातक है इसको जानते हुए भी कि किसी दिन हमारे द्वारा मिलावट की गयी वस्तु हमारे ही घर में आ सकती है. हम अपना धर्म ईमान बेचकर मिलावट में लगे हुए है. आने वाली संतति अपंग पैदा हो या मूक या बधिर पैदा हो इसकी भी हमें चिन्ता नहीं है. बस केवल चिन्ता है तो किसी भी प्रकार से अरबपति बनने की भले ही हमारे अलावा सारा देश मिलावटी वस्तुएं खा खाकर नष्ट हो जायें लेकिन केवल मैं बचा रहूं यही सोचकर प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने तरीके से मिलावट में व्यस्त है.

जब से पानी बिकना शुरु हुआ है तब बन्द बोतलों के पानी में भी मिलावट होने लगी है. जो बोतलें वास्तविक प्रक्रिया से गुजर कर ठण्डा पानी लेकर ग्राहक के पास जाती है उनको पानी पीने के पश्चात जब फेंक दिया जाता है तो उनका पुर्नप्रयोग मिलावटी पानी का प्रयोग करके किया जाता है. जितने शीतल पेय है इन सब में भी पूर्ण रुप से मिलावट की जा रही है. अचार में, मुरब्बे में, चटनी में, जूस में, हर वस्तु में मिलावट है. आदमी खाये तो खाये क्या, पीये तो पीये क्या और जीये तो कैसे जीये.

++++++++++++++++++++++++++

- कतने रंभा आ उरवसी हमरा ऑखि का सोझा आइल लोग बाकिर हाय रे हमार मेनका, तहरा आगा हमरा दोसर केहू ना नू सोहाइल?
- बड़ा तड़पइलू ए हमार मेनका. हमरा त बुझाता कि भगवानो के पावे खातिर अतना छिछिआये के ना पड़ित आ ना त जहमते उठावे के पड़ित जतना कि तहरा के पावे खातिर उठावे के पड़ला. तू हमरा मिलि गइलू, इहे कम का रहल?
- जब तूं गवने आइल रहलू. अबहीं एको-दू दिन ना बीतल रहे कि तूं हमरा से पूछले रहू कि ई बूढ़ा-बूढ़ी कब ले मुइहन? तू त आवते हमरा माई आ बाबूजी के मुआवे के सोंचि लेले रहू.

हाय रे हमार मेनका

डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा,
भोजपुर, बिहार

हाय रे हमार मेनका! कवना खोह में लुकाइल रहलू हा? तहरा के पावे खातिर का ना उतजोग कइनीं? ना जाने कतना पातार-पातर पापड़ बेले के पड़ल? कतने रंभा आ उरवसी हमरा ऑखि का सोझा आइल लोग बाकिर हाय रे हमार मेनका, तहरा आगा हमरा दोसर केहू ना नू सोहाइल?

कहल जाला कि दिल जे आइल गदही प त परी कवना काम के? आहि दादा! ई का कहा गइल? तूं का सोंचे लगलू कि हम तहरा के गदही कहनीं हा? ना हो, हम त परतोख देत रहीं. भला हम अपना जान के गदही कहि सकत बानीं? ई त परतोखे देबे वाला कहउतिये के फेरबा. बुझाता कि हमरा एकरा खातिर परतोख देबे वाला दोसरे कहा उति बनावे के पड़ी.

तूं त अपने परी हउ! तहरा अइसन सुन्नर, सुमेख मेहरानू हमरा अउरी कहवां मिली? हम त जब से तनी अकिल के बरिआर भइनीं तबे से हमरा दिल आ दिमाग में तहरा के पावे के ललसा जागि गइल. ना जाने तहरा में कवन अइसन लहचुमुक फीट भइल रहे कि ॐ हमरा के तहरा कावर खींचत चलि गइल. हमार त तूं मतिये मारि लिहलू.

पहिलवां त हम ठीके-ठाक रहीं बाकिर एक-बा एक ना जाने का भइल कि हमार ई मन बढ़ुआ आ मनसहका दिल आ दिमाग तहरा खातिर बेचैन रहे लागल. ई त हम ना जानत रहीं कि हमरा दिल में जवन आगि लागल रहे ओइसने आगि तहरों दिल में जवन आगि लागल रहे ओइसने आगि तहरों दिल में लागल होई. बाकिर हमरा अपना प काबू ना रहल आ ई बेकाबू होके तहरा इयाद में मेनका, हाय रे हमार मेनका, चिचिआत-चिचिआत आपन नटई तक ले अझुरा लिहलस. बड़ा तड़पइलू ए हमार मेनका. हमरा त बुझाता कि भगवानो के पावे खातिर अतना छिछिआये के ना पड़ित आ ना त जहमते उठावे के पड़ित जतना कि तहरा के पावे खातिर उठावे के पड़ला. तू हमरा मिलि गइलू, इहे कम का रहल?

हम भाग के अतना बरिआरा बानी किं तहरा के पावे खातिर हमरा इचिको घूंस ना देवे के पड़ल. अइसे त हम घूंस दीहल पसन ना करीं बाकिर केहू दे देला त भगवान के मरजी कहि के सकारे में इचिको हिचिकी ना. ना त हम बजरंगे बली के कमीसन देनीं आ ना भोलहीं बाबा के घूंस-घांस देनी. तहरा के पावे खातिर ना जाने कतने लोग बजरंग बली के खांटी घीउ के लड्डू आ भोले बाबा के बेल पत्तर आजल चढ़ावत-चढ़ावत नाकन दम करि देले होई बाकिर उनुका लोग के भाग में तूं ना रहू तबे त हमरे करम में ठोका गइलू.

तहरा अइसन रुपगर रुपसी के पा के हमरा अगरइला के ठेकान ना रहे. एक दम धधाइल चलत रही. तूं त हमार एकदम मतिये मारि लेले रहू तबे त तहरा के छोड़ि के हमार मन आन ठहीं ना लागत रहे. तहरा रुप के छोड़ि के हमार मन आन ठहीं ना लागत रहे. तहरा रुप के जादू हमरा प कुछ अइसन ना चलल कि ओह में अझुरइनीं त अझुराइले रहि गइनीं. कबो-कबा जादे मीठो अनगो करि देला. बुझला एही मीठ तहरा के बाई करि देलस. तू इहे बूझि गइलू कि ई हमरा बिना ना रहि पइहें त लगलू छाव देखावे. रहि-रहि के लगलू ठकठेन करे. तूं इहे सोंचत रहू कि इनिकर त मती मारिये लेले बानीं इनिका हमरा बिना चैन थोड़े ना पड़ी. इहे नू सोंचलका तहार बेजांय रहे. तहरा रुप के जाल में हम अझुराइल रहीं एकर माने का कि हम एकदम मतीभरमे हो गइल रहीं? ई त नीक भइल कि हम एकदम से मतीभरम ना भइनीं.

ओह दिन के बतिआ इयाद बा नू? जबकि तूं गवने आइल रहलू आ अइला अबहीं एको-दू दिन ना बीतल रहे कि तूं हमरा से पूछले रहू कि ई बूढ़ा-बूढ़ी कब ले मुइहन? तू त आवते हमरा माई आ बाबूजी के

मुआवे के सोंचि लेले रहू. हम त तहरा के ओह घरी कुछो ना कहले रहीं. हम इहे सोंचत रहीं कि अतना अकिलगर भइला का बादो तूं अइसन काहें बोलल रहूं? सोंचत-सोंचत हमरा इहे बुझाइल रहे कि बुझला लइकभुड़भुड़ई में अइसन बकले होखबू. कहल जाला कि आवते बहुरिया आ जामते घियवा जवन लत लगावेले ऊ छूटेला ना. आवतें तूं त हमरा घर में आगिये लगावे के सोंचे लागल रहू. अगर हम ओही घरी तहरा प लगाम कसि देले रहितीं त तूं आजु एह रुप में ना लउकतू जवना रुप में लउकि रहल बाड़ू.

तहरे बेजाय रहला का बादों कइअक बेरा तहरे पछ में खाड़ होके हम बाबुओं जी आ माई से अझुरा गइल रहीं. इहे सहवा दिहलका जीव के जंजाल हो गइल जवना के भोग हम त भोगते बानीं हमार माइओ-बाबूजी भोगत बा लोग.

हमरा खूब नीके तरी इयाद बा कि जब तूं आइल रहू हमरा घर में त हमार माई तहरा के कोरा में उठवले रहत रहे. खूब मानत रहे ऊ तहरा के . बाबुओ जी तहार सम बाति मानि लेत रहन. तहरा आगा त हमार कवनों पूछे ना रहे बाकिर तूं हमरा माई आ बाबूजी के दीहल दुलार के गलत माने लगा लिहलू आ ओह बिगड़ल लइका लेखा आपन रहन-सहन बिगाड़ि लेलू जवन कि बाबू-माई के दुलार में बिगड़ि के बहेंगवा के टाटी हो जाला. बुझला तहरो मिलल दुलार के तहरा के बिगड़े में खास हाथ रहे. हमार सह तहरा मिलल तवन त मिलबे कइल हमार माइयो-बाबूजी तहरा के सह देके कम बेजांय ना कइल लोग. हमरा इहे बुझाता कि गवने अइला के बाद जवन बतिआं तूं हमरा से कहले रहलू ओह बतिआ के हम अगर अपना माई-बाबूजी से कहिं देले रहितीं त हम उमेद करत बानीं कि अइसन दिन ना देखे कि पड़ित.

हमरा घर में आके कुछुए दिन में हमार हँसत-खिलखिलात घर के तूं बरबाद क के ध देलू. भाई-भाई में फूट डललू. अपना गोतिनियनों संगे रारे बेसाहत रहलू. अपना चाल से तूं अपना सासो ससूर से फरका भइलू. ई सभ त कइलू, कइबे कइलू, हमरो के तूं इचिको ना गदलनू. हम आ हमंरा परिवार के लोग तहरा के आपन बूझल बाकिर तूं हमनीं के गैर बूझ लू. जब तहरा खातिर सभे गैरे जनाइल त तहरा के आपन के बूझो? नतीजा का भइल? ई तूं नीके तरी जानत बाड़ू. सभ खातिर बेगाना हो गइलू.

तहरा खातिर आपन खाली तहार नइहरे के लोग रहे. हमरो के तूं आपन ना बूझलू. आपन बूझले रहितू त अपना बाबूजी के तूं हमरा के पॉच हजार रुपिया देबे खातिर मना ना नू करितू कि इनका के अतना पइसा मत दीह ना त लवटबों ना करी. हम तहरे आ लइकन-फइकन के खातिर रोजी-रोटी के जोगाड़ कइल चाहत रहीं आ एकरा खाती एगो दोकान खोलल चाहत रहीं. एकरे खातिर पॉच हजार रुपिया के जरुरत रहे आ हम ई रुपिया पइंचा मंगले रहीं बाकिर तहरा अपना मरद प भरोसा ना भइल आ तूं अपना बाबूजी के मना क दिहलू.

तहरा आजु तले इहे नू ना बुझाइल कि कवनों मेहरारु के गहना ओकर मदर ह. ऊ चाहे आन्हर, लुल्ह, लंगड़ भा अइंचे काहें ना होखे. नइहरा के लोग कामे ना आई. आजु तले बड़का से बड़का धनी-मानी, करोड़पति, अरबपति अपना बेटी के बोझा त सम्हारिये ना पवलन त तहरा बाबूजी के अवकाते का रहे कि ऊ तहार बोझा बरदास

ताजमहल

युगो-युगों तक चमकेगा, वो सविता ताजमहल।
प्यार भरे हृदयों पर लिक्खी कविता ताजमहल।।
संगमरमरी भाषा में जो कहता प्रेम कहानी
शाहजहां-मुमताज की गाथा सारे जग ने जानी
जिसकी छवि ने मन जीता, वो इमारत ताजमहल।
अंकित तवारीख पृष्ठों पर, इबारत ताजमहल।
जज्बाती रिश्तों को गाता नग़मा मधुर सुहाना
आज सुन रही दुनिया सारी नग़मा एक पुराना
सुर, लय, ताल समाहित जिसमें, वो अपना ताजमहल।
शाहजहां मुमताज ने देखा, वो सपना ताजमहल।।
पाक़ मुहब्बत जिसमें बहती दिल से दिल की बातें
चांदी से है उजले दिन और सोने सी है रातें
यादों की माटी में महका, गुलशन ताजमहल।
सुंदर-सुंदर अनुपम रचना, उपवन ताजमहल।
लिये दूधिया मोहक आभा आकर्षित करता है
चंदा की किरणों के संग-संग अमृत नित झरता है
आंखों में भरने वाला वो मोहक रुप ताजमहल
उजली उजली मधुर सुहानी, धूप ताजमहल

प्रो० डॉ० शरद नारायण खरे, मंडला, म०प्र०

++++++++++++++++++++++++++

ग़ज़ल

जीवन भर ढूंढता रहा पर न मिला
जिगर जान जहॉ में सब पा जाते।
पाने थे कामी को मिलता खाक
दानी भला क्या-क्या नहीं पाते है।
अनमना राही मंजिल पावें कैसे
सच्चे राही सही वतन पाते है।
दीखाते भक्त अनेको जहॉ में
सच्चे भक्त यहॉ कहॉ मिल पाते है।
भजन करो चकोर दिल से ईश्वर का
स्वयं पास तेरे प्रभु आ जाते है।

डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', पटना, बिहार

करि पइतन?
एक बेरा हमरा से ठेन बेसाहि के गइल रहू नू अपना नइहर कि तहरा अपना हितइये-नतई में दिन काटे के पड़ल रहे. आठे-नव महीना में तहार गींजन हो गइल रहे. हितइये-हितई घूमावत-घूमावत तहार बाबुओ जी के नाकन-दम हो गइल रहे. हम पूछले रहीं तहरा बाबूजी से कि काहें इनिका के हितइये-हितई ठहरा रहल बानीं? त चटे उनुकर जबाब आइल रहे-'लिआ नइखी जात त का करी? तूहूं त एगो चिट्ठी हमरा लगे पेठवले रहू कि हमरा के एहिजा से लिआ चली. हम अब नइहरा में ना रहब. मरि जाइब, मरि जाइब बाकिर नइहरा ना आइब. इहो तूं जानते बाहू कि हमरा मोह लागि गइल रहे. आ हम अपना माई आ बाबूजी के मरजी के खिलाफ तहरा के घरे लिआ आइल रहीं. हम सोंचत रहीं कि अतना दिन में तहरो मिजाज ठंढा गइल होई. कुछ दिन तक बुझाइल बाकिर कुछे दिन बीतल कि तहार पुरनका तेवर फिनु लउके लागल. भला कुकुर के पोंछि घीउ मलला से सोझ होखेला? उहे हाल तहरो रहे. तहरो बाति बेवहार ना बदलल.

ई त हमरा बाद में पता चलल रहे कि तहरा नइहरा में तहरा टोला-मोहल्ला के लोग तहरा के खोभसन मारत रहे कि एकर मरद एकरा के छोड़ि देलेबा. हमरा जनाता कि एही खोभसन के सुनि-सुनि के उबिया के तूं हमरा भिरी लिआ चले खातिर चिट्ठी लिखले रहू. अब तहार चाल-चलन देखि के हमरा इहे बुझाइल कि हम अपनहीं के बदलि लीहीं आ हम तहरा डरा अपना-आप के बदलि लेनीं. के तोहरा से रोज-रोज किचकिच करो? माइयो आ बाबूजी तहरा से हारि मानि लीहल. ऊ लोग टोला-मोहल्ला में आपन बेइज्जतिऑव से बचे खातिर तोहार सब करिस्तानी झेले खातिर तइयार हो गइल. कहल जाला कि लंगा से गंगा डेराली. तूं त एकदम साफा लंगइये प उतरि गइलू. तहरा एह लंगई से चइंवनो के लाजे मुँह तोपि के घूमे के पड़त रहे.

तहरा त जवन करे के रहे ऊ क लेलू. आपन बेटा-बेटी के अपना में साटि लेलू. उहो सभ अपना बाबा-आजी के के कहो, अपना बापो के तहरा कहला में आके भोरा गइलन स कि केहू उन्हजीं के बापों बा. तबे त हमरे बेटा हमरा गरीबी प तहरा कहला में पड़ि के इहॉ तक कहि देलस कि खाली पैदा करि देलन बाकिर का सुख ढेलन? अइसने बाति एक बेरा तूहूँ त कहले रहू कि बिआह के घर में बइढा देलन बाकिर का सुख देलन? हम अपना भाग के बदल त ना सकीं बाकिर तहन लोग के अतना अधिकार जरुर बा कि तूं लोग हमरा के बदलि सकेलू जा. हम बबुअवा से त कुछ कहब ना बाकिर तहरा से कहत बानीं कि जब ऊ तहरा कहला में पड़ि के अपना गरीब बाप के मजाक उड़ा के हमरा के बापो माने के तइयार नइखे त ओकरा से कहि दीहड़ कि ओकर बाप ओकर जनम के बादे मरि गइल. अइसनके कुछ तूहूँ सोंचि लीहड.

हम तहरा से हार मानि गइनीं ए हमार मेनका. अब हमरा के आ हमरा माई-बाबूजी के बकसि द. बकसड बिलार मुरुगा बांड़ होके रहिहें. भगवान मत करसु कि हमरा अइसन दोसर कवनों अकिल के अबराह तहरा अइसन दोसर कवनों मेनका के चक्कर में फंससु. तूहीं एह धरती प चांड़ बनि के रहड़. हमरा के बांड़े रहे द. गलती सही माफ करिह. अब इचिको हमरा में हूब नइखे कि तहरा से गलती-सही माफ करिह. अब इचिको हमरा में हूब नइखे कि तहरा से अझुराईं. जतना दिन एह धरती प बानीं ओतना दिन हमरा के चैन से जी लेबे द. भगवान से हमार इहे गोहार बा कि अगर फिर कतहीं जे हम ई मानुस तन पाईं त ऊ तहरा अइसन मेनका के हमरा गर के फांस मत बनइहें. हमहूँ कान पकड़त बानीं जे अब कवनों दोसर मेनका के चक्कर में फंसी.

आंगन आई धूप

दीवारों का यह नगर, नगर नगर मशहूर
दीवारें मजबूत है दर है चकनाचूर।।
धीरे धीरे बढ़ रहे दीवारों के छेद।
गली गली में खुल गए, मेरे घर के भेद।।
ऑखें दीवारों को दे हम रोज पछताय।
पता न था कि आईना, घर नंगा कर जाय।।
कह दो ले जायें कही, सपने अपना रुप।
दीवारों को फॉद कर, ऑगन आई धूप।।
ऐसे घर में जिंदगी, ख़तरे में मत डार।
दीवारे हैं कॉच की, छत पे सौ मन मार।।
दीवारें ढा जाएगी, सावन की बौछार।
छल वाला घर चाहिए, आर मिले या पार।।
कितनी ऊंची हो गई नफरत की दीवार।
हमसाये के पेड़का साया भी अंगार।।
तुम सांझी दीवार का लो पत्थर खिसकाय।
कल मरती हो अब मरे हम साये की गाय।।
एक समय तो तो भाई भी ऑख चुराता जाय।
सच है आड़े वक्त में हमसाया काम आय।।
आओ मिल जाये गले शिकवे गिले फुलाय।
हम दोनों की दुश्मनी बच्चों तक क्यों जाय।।

भगवान दास ऐजाज़, नई दिल्ली

पत्रकारिता को समर्पित डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय

✍ ईश्वर शरण शुक्ल, इलाहाबाद

१५ जुलाई १९५७ को श्री अवध नारायण उपाध्याय के पितृत्व में जन्में श्री भगवान प्रसाद उपाध्याय स्नातकोत्तर एवं पत्रकारिता डिप्लोमा किए हुए श्री उपाध्याय साहित्य लेखन व पत्रकारिता/समाज सेवा/प्रकाशन /सम्पादन में विशेष रुचि रखते है. १९७४ से साहित्य की प्रत्येक विधाओं में लेखनरत है. १९७९ से तीन वर्ष तक सरस्वती शिशु मंदिर मं प्रधानाचार्य रहे तथा पुस्तकालय की स्थापना व संचालन किया. १९८३-८५ तक साप्ताहिक नवांक में सह सम्पादक रहे. चार वर्ष तक स्थानीय हिंदी दैनिक न्यायाधीश के प्रभारी सम्पादक रहे. १९८१ से साहित्यांजलि का संपादन कर रहे है. १९८५ में प्रयाग प्रताप का सम्पादन किया. लगभग दो वर्ष तक ग्राम्य संवाद मासिक का सम्पादन, अभिषेक श्री का सम्पादन तीन वर्ष तक किया.

आकाशवाणी इलाहाबाद से प्रसारित होने वाले श्री उपाध्याय कई कवि सम्मेलनों का संचालन/संयोजन किया. देश की छोटी बड़ी लगभग एक सौ पत्रिकाओं में छपते रहे है. साप्ताहिक युवा स्वप्न, ग्रमीण जनता, संग्राम बटोही, सुपर इंडिया, वर्क्स हेरल्ड, आज, स्वतंत्र चेतना, दहेज दानव, दैनिक ऋषिकेश, दैनिक वीर अर्जुन के संवाददाता रह चुके श्री उपाध्याय हिंदी मासिक शुभ तारिका के प्रतिनिधि एवं तारिका विचार मंच, प्रयाग के संयोजक है. वर्तमान में भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संयोजक है.

पुरस्कार/सम्मान:हिंदी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद द्वारा साहित्य रत्न की उपाधि १९८२ में, अखिल भारतीय हिन्दी प्रसार प्रतिष्ठान पटना द्वारा फरवरी ८० में साहित्य मणि की मानद उपाधि, स्व० जैनेन्द्र कुमार एवं श्री विष्णु प्रभाकर जी के हस्ताक्षर युक्त सम्मान पत्र ८० में कजरारी

हिन्दी त्रैमासिक दिल्ली द्वारा, अखिल भारतीय आर्य धर्म सेवा संघ द्वारा ध र्मरत्न की उपाधि, सुपर इंडिया द्वारा आयोजित साहित्यिक प्रतियोगिता में सम्मान पत्र, भारत वर्षीय आर्य विद्या परिषद अजमेर द्वारा प्रशंसा पत्र, १९८५ में विद्या विनोद उपाधि, साहित्य लोक परियावां से साहित्य सम्राट, रम्भा ज्योति चण्डीगढ़ द्वारा रम्भा श्री, ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन उत्तर प्रदेश द्वारा १९८८ में विशिष्ट प्रशस्ति पत्र, अखिल भारतीय मानव कल्याण संघ ८९ में साहित्य श्री, रुरल जर्नलिस्ट एसोसिएशन आफ इण्डिया द्वारा सम्मान पत्र, ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन, उ.प्र. के द्वारा ८९ में स्वर्ण पदक, ९२ में स्व० रामनिधि शर्मा सम्मान, मैथिली विश्व विद्यापीठ दरभंगा द्वारा विद्या वारिधि की उपाधि १९९१, वालेन्ट्री आर्गनाइजेशन फोर साइंस एजुकेशन एण्ड रूरल एडवांसमेंट द्वारा एकता पुरस्कार ९३, श्रमजीवी पत्रकार यूनियन द्वारा राजेन्द्र पाल कश्यप सम्मान १९९२, राष्ट्रीय रामायण मेला द्वारा प्रशस्ति पत्र, दिल्ली प्रचार समिति श्रीडूंगरगढ़ राजस्थान से साहित्य श्री, दंरभंगा विश्वविद्यालय द्वारा विद्या वारिधि ा सम्मान प्राप्त कर चुके हैं. वर्तमान में भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ संयोजक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष के रुप में पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दे रहे है.

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० श्रीमती तारा सम्मान योजना

स्वर्ग विभा टीम ने वरिष्ठ साहित्यकार एवं टीम की निदेशक श्रीमती तारा सिंह के सम्मान में सन् २००८ से प्रतिवर्ष एक उच्च स्तरीय रचनाकार को सम्मानित करने का निर्णय लिया है. सम्मान स्वरुप १५००/-रुपये, शाल एवं प्रशस्ति-पत्र देने का प्राविधान है. इसके लिए निःशुल्क प्रविष्टि गद्य/पद्य/ग़ज़ल विधा में प्राकाशित कृति की दो प्रतियों में, दो छायाचित्र, जीवन परिचय के साथ आमंत्रित है. अंतिम तिथि ३० नवंबर २००८, लिखें-

डॉ० बी.पी.सिंह,

बी-६०५, अनमोल प्लाजा, सेक्टर-८, खारघर, नवी मुम्बई-४१०२१०

अथवा

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी,

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, साहित्य सदन, एल.आई.जी-९३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

नोटः स्वर्ग विभा टीम का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा. सम्मान अगले साल फरवी/मार्च में विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा आयोजित छठवे साहित्य मेला, इलाहाबाद में प्रदान किए जाएंगें.

अध्यात्म

गंगा की पावनता में वृद्धि

✍श्री **कृष्ण गोयल**, दिल्ली

गंगा परम पावन है, पाप हरणी है तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्रदायिणी है. महाराजा भगीरथ तथा उसके पूर्वजों की तपश्चर्या के परिणाम स्वरूप गंगा का अवतरण वैकुंठ लोक से धरती पर हुआ. जब गंगा को धरती पर उतरने का आदेश मिला, तो उस ने आक्षेप किया कि वह पापियों के पाप धोते-२ स्वयूम अपवित्र हो जायेगी, इस पर भगवान विष्णु ने गंगा को कहा कि भक्त तथा सिद्ध पुरुष भी गंगा में स्नान करने आयेंगें, उनके पुण्य फल सं गंगा की पवित्रता बनी रहेगी. गंगा की गति इतनी तीव्र थी कि धरती उस को सह नहीं सकती थी, भगवान शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को धारण किया तथा उस के उपरान्त गंगा धरती पर अवतरित हुई तथा निरन्तर मनुष्यों का कल्याण कर रही है. निम्नलिखित लेख द्वारा हम गंगा के अवतरण की कथा का आध्यात्मिक तथा दिव्यात्मक अर्थ समझने का प्रयास करेंगे ताकि हम इस की पवित्रता में वर्तमान संदर्भ में वृद्धि कर सकें.

पावनता का अर्थ है सदा परमात्मा से युक्त रह कर शुद्ध रहना तथा सबको अपना अभिन्न अंग समझ कर प्रेम करना. एकता की भावना की महसूस करना तथा जीना हमारा परम कर्तव्य तथा सर्वोपरि धर्म होना चाहिए. जब हमारे भीतर भेदभाव की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है, हम परमात्मा से टूट जाते है, यह ही पाप तथा अज्ञान है. इस से अहंकार तथा स्वार्थ उत्पन्न होता है एवं मनुष्य अपने आप को निरन्तर सीमित करता जाता है. यदि हम स्वयं को असीम परमात्मा से युक्त करके प्रेमपूर्वक जीवन जियें तो हमें परम आनन्द, असीम शान्ति तथा परमात्मा की दिव्य शक्ति प्राप्त होती रहेगी तथा हमारा आन्तरिक गंगा में पल प्रतिपल स्नान होता रहेगा. परमात्मा से विमुख होकर आज मनुष्य का जीवन भोगप्रधान हो गया है, इसीलिए प्रकृति विरोधी गतिविधियां हो रही है. गंगा प्रदूषण भी इसी भोग प्रवृत्ति का परिणाम है. जब हम परमात्मा से युक्त होकर योगमय दिव्य जीवन जीना प्रारंभ कर देंगे, तो असीम मात्रा में दिव्य शक्ति ऊधर्व लोकों से धरती पर अवतरित होगी जोकि प्रकृति के पर्यावरण पर तथा मनुष्यों की मानसिकता पर सकारात्मक दिव्य प्रभाव डालेगी. हमने भगवान शिव की भांति अंहकार, स्वार्थ तथा निम्न इच्छाओं से ऊपर उठकर समस्त मानवता के कल्याण के लिए कर्म करते हुए अपने शिव तत्व को जागृत करना है जिसके उपरान्त हमारी पावनता की क्षमता के अनुरुप दिव्य शक्तियां हमारे द्वारा धरती पर उतरनी प्रारंभ हो जायेंगी. इस प्रकार धरती का रुपान्तरण प्रारंभ हो जायेगा, यह ही शिव जी का गंगा को अपनी जटाओ में धारण करना है. दिव्य शक्ति परम पावन होती है, उसको धारण करने की क्षमता उसी व्यक्ति में आती है जो सदा शान्त रहे, अहंकार तथा स्वार्थ से मुक्त हो, प्रभु चिन्तन मं संलग्न हो तथा सदा मानवता के कल्याण में कार्यरत हो एवमू दिव्य प्रेम का जीवित विग्रह हो. आन्तरिक शुद्धता का प्रभाव बाह्य पर पड़ता है. हमने परमात्मा से युक्त होकर आन्तरिक तथा बाह्य दोनों की शुद्ध करना है. हमें सदा गंगा माता की पावनता, शीतलता, शुभता, स्निग्धता एवं दिव्यता का चिन्तन करना चाहिए ताकि हम इतने शुद्ध हो जाएं कि हमारी शुद्धता का प्रभाव समस्त विश्व पर पड़े.

अ०भा० अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कारों हेतु प्रविष्टिंया आमंत्रित है

शीर्षस्थ ऐतिहासिक उपन्यासकार, कवि, चित्रकार एवं साठ महत्वपूर्ण ग्रंथो के सर्जक स्व. अम्बिकाप्रसाद 'दिव्य' की स्मृति में साहित्य सदन, भोपाल द्वारा प्रदान किये जाने वाले अनेक साहित्यिक पुरस्कारों हेतु पुस्तकें आमंत्रित है.

उपन्यास विधा हेतु	:	पॉच हजार रुपये
कहानी विधा हेतु	:	दो हजार एक सौ रुपये
काव्य विधा हेतु	:	दो हजार एक सौ रुपये
नाटक, व्यंग्य, ललित-निबंध, पत्रकारिता, बाल साहित्य, दिव्य साहित्य पर शोध एवं साहित्यिक पत्रिकाओं हेतु	:	दिव्य रजत अलंकरण

पुस्तकें जनवरी २००५ से दिसम्बर २००७ के मध्य प्रकाशित होना चाहिए. पुस्तकों की दो प्रतियां, प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सौ रुपये प्रवेश शुल्क, लेखक संपादक के दो रंगीन चित्र एवं परिचय ३० नवम्बर २००८ तक श्रीमती राजो किजल्क, साहित्य सदन, ४६ द्वारकापुरी, कोटरा रोड, पी.एण्ड.टी चौराहे के पास, भोपाल-४६२००३ के पते पर पहुँच जाना चाहिए. निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा. पुस्तके लौटायी नहीं जाएगी. पुस्तकों पर पेन से कुछ न लिखें.

- यादतो उनको किया जाता है जिन्हें भूला जाता है, तुम तो मेरी हर सॉस में खुशबू की तरह बसी हो.
- प्यार की परिभाषा तो आज तक कोई नहीं बता पाया, शायद शिव और सती ने भी प्यार किया था, कृष्ण और राधा भी प्रेम रस में डूबे थे और उसी तरह किशन और नीलिमा.
- जानती हो नीलिमा यहॉ सच्चे दिल से जो भी मांगो मिलता है." तुमने क्या मांगा. नीलिमा "दिल है ही कहां, वो तो तुमने पहले ही ले रखा है, मैं तो बस उसी को मॉगती हूॅ जिसके पास मेरा दिल है, वर्ना तो मर ही जाऊॅगी.

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, इलाहाबाद

सिर्फ तेरा इंतजार

"किशन" आज मैं तुमसे बहुत नाराज हूॅ कहते हुए नीलिमा ने मुॅह फेर लिया. "अरे भई अब मैंने कौन सी गलती कर दी." किशन ने प्यार से पूछा. तुम पूरे बीस सेकंड लेट हो. जानते हो कितनी मुश्किलों से मुलाकात होती है, आज पूरे बीस सेकेंड कम हो गये जब मैं अपने किशन को देखती रहती. क्या तुम्हारी धड़कनें हर पल बेचैन होकर मुझे याद नहीं करती. नीलिमा ने किशन की ओर देखते हुए कहा. किशन ने कहा-"अरे पगली इतना प्यार करती हो."

"नहीं तुम्हें कौन प्यार करेगा." नीलिमा ने बनावटी गुस्से से कहा. किशन समझाते हुए "याद तो उनको किया जाता है जिन्हें भूला जाता है, तुम तो मेरी हर सॉस में खुशबू की तरह बसी हो."

इसी के साथ किशन ने जेब से सिगरेट निकाली और जलाने लगा. नीलिमा ने सिगरेट छीनते हुए कहा-"तुम नहीं सुधरोगे, तुम फिर पी रहे हो. मैं तुमसे कभी बात नहीं करुॅगी, तुमने अगर आज के बाद पी तो." किशन ने हॅसते हुए कहा "अभी तो एक पल भी मेरे बिना नहीं बीतता था अब कभी बात नही करोगी." नीलिमा-"तुम इसे छोड़ोगें या मुझे."

"प्यार में शर्ते नहीं रखी जाती नीलिमा." किशन ने कहा.

नीलिमा-"मगर अधिकार तो होता है"

किशन-"वो तो तुम्हें है."

नीलिमा-"तो फिर वचन दो, अब कभी नही पियोगे."

किशन-"ठीक है एक बात मेरी भी माननी होगी."

नीलिमा-"क्या?"

किशन-"जीवन में हर पल मेरी नीलिमा, हर गलत काम के लिए मुझे रोकती रहेगी."

"तुम्हारी कसम ऐसा ही होगा" नीलिमा की ऑख भर आई कहते-कहते. कुछ देर दोनों खामोश बैठे रहे. पिछले तीन सालों से किशन और नीलिमा इसी तरह छुप-छुपकर मिलते है. दोनों हर बात पर बच्चों की तरह लड़ते है और फिर प्यार से एक दूसरे की बात मान जाते है.

नीलिमा-"किशन तुमने आज तक मेरी अगुॅली भी नहीं पकड़ी,मैं नहीं जानती क्यों, लेकिन शायद मुझे अच्छा लगता है कि मेरा किशन सिर्फ मुझसे प्यार करता है, मेरे विचारों से, मेरे मन की गहराइयों से और......."

"तुमसे" किशन ने तपाक से कहा, नीलिमा "प्यार की परिभाषा तो आज तक कोई नहीं बता पाया, शायद शिव और सती ने भी प्यार किया था, कृष्ण और राधा भी प्रेम रस में डूबे थे और उसी तरह किशन और नीलिमा.

नीलिमा, खामोश हो गई. उसने अपना सिर किशन के सीने पर रख दिया और कहा "अब यह नीलिमा पूर्ण रुप से तुम्हारी हो चुकी है किशन!"

किशन-इसमें शंका की कोई बात नहीं है. तभी नीलिमा ने घड़ी देखते हुए कहा बहुत देर हो गयी मैं चलती हूॅ. किशन-"तुम्हें देर होने लगी." अच्छा जाओ.

नीलिमा और किशन दोनों उठकर चल दिए. कुछ आगे जाते हुए नीलिमा "फिर कब मिलोगे" किशन.

किशन "कहो तो आज ही जन्मों-जन्मों के बंधन में बंध जाए, बगल में ही मनकामेश्वर मंदिर है."

नीलिमा हॅसने लगी.

"किशन तुम बहुत बेवकूफ हो कुछ नहीं समझते" आओ थोड़ी देर के लिए मंदिर में चलते है."

किशन-"ठीक है."

किशन ने माला फूल खरीदा और नीलिमा को पकड़ाया.

नीलिमा "तुम नहीं लोगे."

किशन-"क्या हम दोनों अलग है."

दोनों मंदिर में गए और फूल शिवलिंग पर चढ़ाकर आराधना की.

"जानती हो नीलिमा यहॉ सच्चे दिल से जो भी मांगो मिलता है." तुमने क्या मांगा.

नीलिमा "दिल है ही कहां, वो तो तुमने पहले ही ले रखा है, मैं तो बस उसी को मॉगती हूॅ जिसके पास मेरा दिल है, वर्ना तो मर ही जाऊॅगी." अचानक किशन ने एक जोरदार तमाचा नीलिमा

के गाल पर मारा. "खबरदार जो कभी मरने की बात की." जिस किशन ने नीलिमा की अंगुॅली भी न पकड़ी थी, आज उसका ये तमाचा.

अचानक नीलिमा को जाने क्या सूझा और वह किशन से लिपट कर जोर-जोर से रोने लगी. कुछ देर बाद "किशन आज मैं जान गई प्यार क्या होता है. " आई लव यू किशन कहते हुए नीलिमा चली गई.

"कहॉ से आ रही हो नीलिमा." मॉ ने कड़कते हुए पूछा. नीलिमा ने अभी घर के अन्दर कदम रखा ही था. उसे कुछ समझ न आया उसने झट से कहा "साधना के घर से"

"अच्छा साधना का घर सरस्वती घाट पर है या मनकामेश्वर मंदिर में." मॉ ने पूछा. अब नीलिमा को कुछ समझ में न आया कि क्या करें. तभी पीछे से उसका बड़ा भाई आया और उसने दो जोरदार थप्पड़ नीलिमा के गालों पर जमाए. मगर नीलिमा रोई नहीं और उसने दृढ़ता से कहा "मॉ मै किशन से मिलकर आ रही हूँ."

नीलिमा दौड़कर अपने कमरे में चली गई. दूर से उसे मॉ की आवाज सुनाई पड़ रही थी ऐसी लड़की होने से अच्छा था मैं इसे पैदा ही न करती, मेरे खान-दान की नाक कटवाएगी ये, वगैरह-२....

उधर किशन को शाम से जाने क्यों बड़ा अनमना सा महसूस हो रहा है. अपने कमरे में वो नीलिमा की तस्वीर लिए बैठा है. उसका मन बेचैन है और वो नीलिमा के फोन का इंतजार कर रहा है. क्योंकि नीलिमा हर शाम उसे फोन करती थी मगर रात के आठ बज चुके थे अभी तक फोन न आया.

दूसरी तरफ नीलिमा अपने कमरे में फूट-फूट कर रो रही थी. उसे अचानक जाने क्या सूझा और सबकी नजरें बचाती हुई धीरे से फोन के पास पहुॅची और किशन को फोन मिलाया. हैलो! "किशन कल बारह बजे मुझसे वहीं मिलना चाहे जो भी हो." इसके साथ ही उसने फोन रख दिया.

किशन की बेचैनी और भी बढ़ गयी. कल १०.३० से १२.३० तक उसका पेपर था, खैर किसी तरह रात कटी. किशन ने पेपर ११.४५ तक खत्म किया और अपनी मोपेड से भागते हुए पहॅुचा. नीलिमा पहले से उसका इंतजार कर रही थी. झट से वो मोपेड पर बैठ गई और किशन से बोली, "जल्दी से मुझे मंदिर ले चलो."

किशन को कुछ भी समझ न आया. फिर भी वह चल दिया. किशन "नीलिमा बात क्या है?"

नीलिमा चुपचाप बैठी रही! अचानक ही बादल घिर आए और ठंडी-२ हवा चलने लगी. किशन नीलिमा को नीलिमा को लिए चला जा रहा था. अचानक नीलिमा ने अपना सर किशन के कंध ो पर टिका दिया और जाने कहॉ से दो बूंद ऑसू टपक कर किशन के कंधे पर आ गिरे. किशन विचलित हो उठा, उसने मोपेड रोक दी, मगर नीलिमा ने कहा चलते रहो.

किशन भी चुप, नीलिमा भी चुप. थोड़ी देर में दोनों मंदिर पहुॅचे. दोपहर के समय मंदिर अक्सर खाली रहता था. किशन "नीलिमा क्यों मेरी जान लेने पर तुली हो बताओ तो क्या बात है" नीलिमा ने पूछा "किशन तुम मुझे बहुत प्यार करते हो."

किशन "कोई शक है तुम्हें."

नीलिमा "मेरी एक इच्छा पूरी करोगे"

किशन "मुझसे मेरी नीलिमा को छोड़कर तुम कुछ भी मांग सकती हो." दोनों ही मंदिर में पूजा स्थल के समक्ष खड़े थे. नीलिमा ने बैग से एक डिबिया निकाली और किशन की ओर देखते हुए बोली "इस सिंदूर से मेरी मांग भर दो, किशना! ईश्वर को साक्षी मानकर मुझे अपनी पत्नी स्वीकार कर लो."

किशन सहसा अविश्वास् से पीछे हट गया. उसके मुख से निकला "नीलिमा"

नीलिमा "किशन कुछ न कहो, बस मेरी खातिर मेरी बात माल लो वर्ना मैं समझूंगी किशन पर मेरा विश्वास झूठा था."

किशन आसमान की ओर देख जाने क्या सोचने लगा और नीलिमा आशा भरी नजरों से उसकी तरफ देख रही थी जैसे किशन की एक हॉ में ही उसकी जिंदगी सिमट गई थी.

किशन ने चुटकी भर सिंदूर लिया

अभिव्यक्ति

जिक्र करता हॅू कि तुम्हारी मौत का आज मै
कल कोई मेरी मौत का जिक्र करेगा।
कल रात जब सोया तो एक विचार आया
क्यों न 'खुदा पर नालिश करुं'?
पर फिर सोचा, सम्मन किसे भेजा जाये?
'प्लीडर' से मिला बड़ा हॅसा,
बोला उस पर नालिश की कोई धारा नहीं।।
हम दिखावे की जिंदगी जी रहे है,
कर्ज लेकर घी पी रहे है।
जिंदगी इस कदर सिमट गई है
कि पड़ोस में कोई मर जाय तो पता नहीं।
चार पैसे आते ही लोग अपनी औकात भूल जाते है
खुदा को तो क्या इंसा को भी भूल जाते है।
आप आये बहार आई ओठों पर मुस्कान आई
दर्द तो दर्द है दर्द का क्या कीजिएगा
कोई मरहम हो तो दीजिएगा।।

किशन कुमार अग्रवाल 'केन', मुंबई, महाराष्ट्र

और नीलिमा की मांग भर दी. नीलिमा की ऑखों से ऑसुओं की अविरल धारा बह उठी. उसने झुककर किशन के पैर छू लिए. किशन ने प्यार से उसे उठाया और गले लगा लिया.

किशन आज अशांत भी था और खुश भी. उसे क्या मालुम था कि अगला पल उस पर कितना कहर ढाने वाला था.

"किशन मैं जा रही हूँ."

नीलिमा ने कहा-"शायद ये हमारी आखिरी मुलाकात है."

"क्या...! क्या कहा तुमने." किशन को जैसे सॉप सूँघ गया हो?

"देखो किशन मुझे गलत मत समझना, मैं अपना जीवन सिर्फ अपने किशन का बन कर गुजरना चाहती हूँ. इसलिए आज मैंने खुद को तुम्हारा बना लिया. परन्तु मेरे माता-पिता को लगता है कि मैने कोई गुनाह किया है, इसलिए उनका दुःख भी तो समझना होगा, उनको तकलीफ पहुँचा कर मैं स्वयं की नजरों में मुजरिम नहीं बन सकती और तुम्हारा-मेरा रिश्ता तो अमर है. मुझे लगता है कि हम एक-दूजे से दूर रहकर भी एक-दूसरे से इतना ही प्यार करेंगे. किशन मैं कहीं भी रहूँ मेरी आखिरी सॉस तक सिर्फ तुम मेरे रहोगे. बस किशन और कुछ मत कहना वर्ना मेरा इरादा कमजोर पड़ जायेगा."

कुछ पल के लिए माहौल एकदाम शांत हो गया. किशन ने चुपचाप मोपेड स्टार्ट की और नीलिमा की ओर देखा. नीलिमा बैठ गई. नीलिमा का सिर किशन की पीठ पर सटा था और उसकी कमीज नीलिमा के ऑसुओं से भीगी जा रही थी. मगर वो तो जैसे पत्थर हो चुका था, उस पर कोई असर नहीं पड़ रहा था.

थोड़ी देर बाद नीलिमा के घर के पास किशन ने उसे छोड़ा और बिना उसकी तरफ देखे मोपेड मोड़ कर जाने लगा. नीलिमा ने आवाज दी किशन मुड़कर नीलिमा के करीब पहुँचा, नीलिमा ने एक खत निकाल कर किशन की ओर बढ़ाया और कहा इसे कल खोलना. इसके साथ ही उसने बिजली की गति से किशन को होठों को चूमा और वहॉ से दौड़ते हुए अपने घर में घुस गई. किशन अवाक देखता रह गया.

किशन बहुत बेचैन है, वो नीलिमा का दिया खत पढ़ना चाहता है मगर खोल नहीं पा रहा है. अंततः दिल से हार कर उसने खत खोल ही दिया. किशन खत पढ़ने लगा.

प्रिय किशन,

मुझे माफ करना, मैं तुम्हारे साथ निभा नहीं पाई. ये दुनिया मुझे-तुम्हारे साथ नहीं जीने देती और मैं तुम्हारे बगैर जी नहीं सकती. इसलिए मैं सबसे दूर जा रही हूँ. मैं तुम्हारी मुजरिम हूँ, मुझे माफ कर देना.

ईश्वर से प्रार्थना करना कि अगली बार हम जब भी मिलें तो सिर्फ मैं हूँ और तुम हो, बीच में न दुनियॉ वाले हों और न उसकी रस्में, बीच में हो सिर्फ प्यार. मुझे फक्र है कि मै अपने किशन की सुहागन बनकर इस दुनियां को अलविदा कह रही हूँ.

तुम्हारी... सिर्फ तुम्हारी

नीलिमा

किशन को कुछ समझ नहीं आया, उसने मोपेड निकाली और जितनी तेजी से संभव था नीलिमा के घर पहुँचा. वहॉ पहुँच कर उसकी धड़कनें थम गई, उसे लगा जैसे वो चक्कर खाकर गिर पड़ेगा.

नीलिमा के घर के सामने ढेर सारी भीड़ लगी हुई थी और पुलिस की जीप बाहर खड़ी हुई थी, साथ में एक एम्बुलेन्स. जैसे ही वह अन्दर पहुँचा उसने देखा सामने नीलिमा का मृत शरीर पड़ा हुआ है. पता चला कि उसने कोई विषाक्त पदार्थ खाकर आत्महत्या कर ली. किशन जड़वत कुछ देर वहीं खड़ा रहा फिर वहॉ से चल दिया, कैसे वह घर पहुँचा उसे खुद नहीं पता.

आज उस घटना को ढाई साल बीत चुके है. किशन आज नीलिमा को अपना एक हजारवॉ खत लिख रहा है, जिसको उसे कहॉ पोस्ट करना है उसे भी नहीं मालूम पर हर रोज एक खत वो नीलिमा के नाम लिखता है. खत लिखकर किशन उसे पढ़ता है और फिर चुपचाप उसे रख सिगरेट जलाता है और ऑख बंद कर फिर अतीत की यादों में खो जाता है.

वो आज भी अपनी नीलिमा का इंतजार कर रहा है. वो कब आएगी इसका जवाब किसी के पास नहीं है.

++++++++++++++++++++++

निठुर हो गयी छॉव

वे क्या समझेंगे यहॉ, मजदूरों की पीर।
खाने को मिलती जिन्हें, बनी बनायी खीर।।
अपने मीठे स्वरों को, गयी बॉसुरी भूल।
फूल बगीचे में खड़े, लेकर हाथ त्रिशूल।।
निश्छल जिसकी नारि है, ज्ञानवान सन्तान।
'चंचल' धर्मी व्यक्ति का, है घर स्वर्ग समान।।
जग में है खल बेर से, खींचे अपनी ओर।
ऊपर से कोमल लगें, अन्दर हृदय कठोर।।
कोने में बैठी हुई, मानवता मन मार।
देखी जीत असत्य की, और सत्य की हार।।
राम-नाम के ठौर पर, बैठ गया है दाम।
नहीं हो रहा आजकल, विनु रिश्वत के काम।
अहंकार ने मनुज-मन, जमा रखी है धाक।
चहल-पहल दिखती नहीं, बेघर हॅसी-मजाक।।
व्यक्ति हुआ बेचैन हर, दुखी हुआ हर गॉव।
भरी क्रूरता धूप में, निठुर हो गयी छॉव।।

ओम शरण आर्य 'चंचल',अल्मोड़ा,उत्तराखंड

स्नेह बाल मंच

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को कहॉनी पढ़ना तो अच्छा लगता ही होगा. इस बार अच्छी-अच्छी कविताएं आप लोगों के लिए दे रही हूॅ. आशा है पंसद आएगी. आप लोगों को पसंद आये तो अपनी बहन को जरुर लिखिएगा.

आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

अमर भारत

कितना सुन्दर भारत प्यारा।
प्राण से प्यारा देश हमारा।।
उत्तर में गिरिराज हिमालय।
दक्षिण में है सागर न्यारा।।
सबके अलग-अलग पहिनावे।
सबकी अपनी-अपनी भाषा।।
पर गंगा की धारा सी है।
एक हमारी हिन्दी भाषा।।
मानवता और प्रेम भाव।
मूलमंत्र है सब धर्मों का।।
आओ प्रेम की ज्योति जलायें।
हर कुटिया को हम महकायें।।
आगे बढ़े और देश बढ़ाये।।
एक साथ मिलकर गायें।
सभी धर्मो का हो यह नारा।
धर्म से ऊपर राष्ट्र हमारा।।
प्राण से प्यारा देश हमारा।
अमर रहे भारत हमारा।।

✍मालती बसंत, भोपाल, म.प्र.

पेड़-पौधे

पेड़-पौधे हरे-भरे,
जीवन में उमंग भरें।
वातावरण में लाते हरियाली
जीवन में लाते खुशहाली।
प्रदूषण को ये झेलते खुद,
वायु को कर देते शुद्ध।
बनाकर के स्टार्च रुपी भोजन,
करते है ये सबका पोषण।
सबका जीवन इन पर है टिका,
नहीं किसी से है शिकवा-गिला।
देते हमें ये अनाज,
हमें है इन पर बड़ा ही नाज।
बड़ी विचित्र है इनकी माया,
देते पशु-पक्षियों को छाया।
सबके प्रति रखते दया-भाव,
रोकते हैं ये भूमि-कटाव।
आओ मिलकर करे यह प्रण,
पेड़-पौधों पर करें जीवन समर्पण

पर्यावरण एक गुलदस्ता

पर्यावरण हो स्वच्छ व सुंदर,
हम सब इसके हैं प्रहरी।
गुलदस्ता ये सजा हमीं से,
ग्रामीण हो या हो शहरी।
हम ही काट रहे हैं जगल,
कर रहे हैं काम अमंगल।
निरंतर कर रहे हैं विकास
पर मूल्यों का हो रहा हास।
नाम विकास पर हास है दिखता,
मानव हुआ है आज मानवता हीन।
आधुनिकता से हुआ वह नवीन,
पर विचारों से हुआ है दीन।
दूषित अंदर बाहर प्राणी,
अब हम सबकी नहीं है खैरी।
गुलदस्ता है पर्यावरण हमारा,
ग्रामीण हो या हो शहरी।

✍कु0 प्रतिभा, कक्षाः 9, सोनीपत, हरियाणा

डॉ० तारा को भारत ज्योति अवार्ड

मुम्बई के वरिष्ठ छायावादी कवि रचनाकार, गज़लकार एवं कहानीकार, डॉ. श्रीमती तारा सिंह को इंडिया इंटरनेशनल फ्रेंडशिप सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा २८ मार्च २००८ को एक भव्य समारोह में उनकी अद्वितीय साहित्य सेवा तथा उत्कृष्ट रचना धर्मिता के लिए 'भारत ज्योति अवार्ड' एवं सर्टिफिकेट ऑफ एक्सेलेन्स' से अलंकृत किया गया. प्रख्यात विद्वान एवं भूतपूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त श्री जे.वी.जी.कृष्णमूर्ति, भूतपूर्व अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष, डॉ० मो० सफी कुरेशी, सात राज्यों के राज्यपाल रह चुके श्री भीष्म नारायण सिंह तथा जम्मू-कश्मीर के शिक्षा मंत्री, श्री गुरुचरण सिंह मेहरा जी के हाथों श्रीमती सिंह अवार्ड स्वरुप स्वर्ण जड़ित ट्रॉफी एवं सर्टिफिकेट प्रदान किए गए.

३० मार्च, २००८ को भारतीय साहित्यकार सांसद, समस्तीपुर द्वारा इन्द्रालय रेल सभागार में आयोजित एक सारस्वत सम्मान समारोह में डॉ० तारा सिंह को हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व योगदान एवं उपलब्धियों के लिए 'विद्या सागर' मानदोपाधि से विभूषित किया गया. सभाध्यक्ष श्री हरिवंश तरुण द्वारा डॉ० तारा सिंह को प्रशस्ति पत्र, शॉल, लॉकेट तथा पुष्प-माल्य प्रदान कर सम्मानित किया गया. डॉ तारा को ८६ विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है.

भागे न कोई हार के

अंधेरे से समझौता
पुरानी बात है
भटको नहीं
रूह की रोशनी
तुम्हारे पास है
जरा गर्दन को झुकाओ
दिल में झांको
रूह के दर्पण में
अपना दर्प आंको
लौट जाओ, रात ढल चली है
चमन में चटखने लगी हर कली है
मुस्कराओ
नई सुबह की किरन
जगमगाये चमन
तेरे हास से
ऋतुम्भरा
धरा की सगाई
जुड़ जाये मधुमास से
खिले फूल
शांति के, प्यार के
जिंदगी के संग्राम में
भागे न कोई हार के।

राजकुमार जैन 'राजन', राजस्थान

++++++++++++++++++++

सीमा पार गए हम

जब से मिले
तुम से नैर रे!
दिल ही अपना
हार गए हम!
ऐसे किए
तुमने सैन रे!
वार गए हम।
कैसे सुनाएँ
निज बैन रे।
तीर पे तुम
मंझधार गए हम।
निशि दिन मिले
अब ना चैन रे
पीर की सीमा
पार गए हम

डॉ० मिर्जा हसन नासिर, लखनऊ

+++++++++++++++++++

कलियुग में भगवान

त्रेता युग में राम हुए
रावण का संहार किया
द्वापर में श्रीकृष्ण आ गए
कंस का बंटाधार किया।
कलियुग भी है राह देखता
किसी राम कृष्ण के आने की
भारत की पावन धरती से
दुष्टों को मार भगाने की।
आओ हम सब राम बने
कुछ लक्ष्मण का सा रुप धरें
नैतिकता और बाहुबल से
आतंकवाद को खत्म करें।
एक नहीं लाखों रावण है
जो संग हमारे रहते है
दहेज-गरीबी-अशिक्षा का
कवच चढ़ाए बैठे है।
कुम्भकर्ण से नेता बैठे
मारीच से छली यहॉ
स्वार्थो की रुई कान में इनके
आतंक पर देते न ध्यान।
शीघ्र एक विभीषण ढूंढों
जो नाभि का पता बताएगा
देशभक्ति का एक बाण से
रावण का नाश कराएगा।

ए. कीर्तिबर्द्धन, मुजफ्फरनगर, उ०प्र०

++++++++++++++++++++

लहू वाली रोटियॉ

हिंसा-मानवता
दो अलग-अलग दिशाएँ
एक-दूसरे की ओर
खड़ी पीठ मोड़
मानवता की कोख से
नहीं उपजती हिंसा,
वह तो धर्म की एक पुकार पर
दौड़ती आती है,
नंगी तलवारों का हजूम लिए
गोधरा की साजिशों का
उतारा गया बदला
गुजरात?
हो गया गुजरी रात का हादसा
मौत के आगोश में
मासूमियत ऑख मींचे पड़ी,
कुर्सियॉ कर रखी ताण्डव,
इतिहास भी है खौफ़ज़दा
रात-रात भर पहरा देती सॉस
वे कौन लोग हुए
जो छुप-छुपकर वार करते हैं?
जेहाद के नाम पर
धर्मयुद्ध के नाम पर
कत्लेआम करते है,
मैंने जो उठाई रोटी
टपक उठा लहू
लाल हो गई हथेली
उस मिट्टी में उगी
लहू वाली रोटियां.

अंजु दुआ जैमिनी, फरीदाबाद, हरियाणा

++++++++++++++++++++

ग़ज़ल

चाहा था जिसे हमने इस जान की तरह
वो शख़्स मिल रहा है अन्जान की तरह
फिरते हे खुदा बनके जो लोग जमाने में
मिलते नहीं इन्सान से इन्सान की तरह
मुफ़लिस की झोपड़ी हो या शीशमहल कोई
रहना है यहॉ सबको मेहमान की तरह
किस किस को बताओगे इस दिल की दास्तां को
हर दिल को बिखरना है अरमान की तरह
जब तक मैं समझ पाता कुछ देर हो चुकी थी
ये वक्त़ गुजरता है तूफान की तरह
इतरा रहे हो जिसपे वो जिस्म बेवफा है
दो पल में बदलता है बेजान की तरह
कितना है रहमदिल मेरा कातिल तो देखिये
वो कत्ल कर रहा है एहसान की तरह।

राजीव राय, लखनऊ, उ०प्र०

डॉ. मंसूरी को प्रतिभा सम्मान

भाग्य दर्पण मासिक के सम्पादक डॉ. आई.ए.मंसूरी को उनके साहित्यिक एवं ज्योतिष सेवाओं के लिए क्षेत्र की सुप्रसिद्ध संस्था 'प्रतिभा कल्याण परिषद' पलियाकलॉं, खीरी द्वारा एक समारोह में १ मार्च ०८ को प्रतिभा सम्मान से नवाजा गया. यह सम्मान परिषद के नवम् अलंकरण समारोह में बजाज हिन्दुस्तान प्रा.लि. पलिया कला के महाप्रबन्धक जे.एस. चीमा के कर कमलों से मिला. डॉ. इकबाल अहमद मंसूरी को यह सम्मान लेखन एवं ज्योतिष के लिए प्रदान किया गया.

अखिल भारतीय सम्मान समारोह २००८

जैमिनी अकादमी द्वारा अखिल भारतीय सम्माना समारोह २००८ का आयोजन किया जा रहा है. जिसमें निम्न सम्मान प्रदान किये जाएंगेः-

कबीर सम्मान, हाली पानीपती सम्मान, आचार्य सत्यपुरी नाहनवी सम्मान, काका हाथरसी सम्मान, कृष्ण दत्त तुफान पानीपती सम्मान, माता सीता रानी सम्मान, आचार्य सम्मान

उपरोक्त सम्मान हेतु लेखक, पत्रकार, समाज सेवी, भाषा प्रचारक आदि से आवेदन आमन्त्रित है. प्रत्येक राज्य में प्रत्येक सम्मान एक-एक को प्रदान किया जाएगा. इनके अतिरिक्त प्रत्येक राज्य में एक रत्न प्रदान किया जाएगा. जैसे हरियाणा रत्न, पंजाब रत्न, राजस्थान रत्न, आदि सभी राज्यों में प्रदान किए जाएगें. उपरोक्त सभी सम्मानों के लिए निम्नलिखित विवरण सहित आवेदन करें

नाम, जन्म तिथि, जन्म स्थान, शिक्षा, प्रकाशित पुस्तक/पत्र-पत्रिका, समाज सेवा/ भाषा प्रचार का विवरण, प्राप्त सम्मान/पुरस्कार आदि का विवरण

उपरोक्त विवरण के साथ फोटो तथा दो सौ रुपये का बैक ड्राफ्ट सहित आवेदन करें. अगर उपरोक्त कोई भी सम्मान आपको प्रदान नहीं किया जाता है तो ऐसी स्थिति में प्रशस्ति पत्र से अवश्य सम्मानित किया जाएगा. जो किसी कारण से समारोह में नहीं आ सकेंगे, उन्हें सम्मान डाक से भेज दिया जाएगा.

अंतिम तिथिः २८ मई २००८

सहयोग राशि यूनियन बैंक आफ इण्डिया के खाता सं. **३६६७०२०१००४६१४६** में सीधे जमा करवा सकते है.

भेजें: **डॉ० बीजेन्द्र कुमार जैमिनी**
निदेशक, जैमिनी अकादमी
हिन्दी भवन, ५५४-सी, सेक्टर-६, हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, पानीपत-१३२१०३, हरियाणा

अम्बिका प्रसाद दिव्य जन्म शताब्दी समारोह सम्पन्न

'समाज में बहुत सारे परिवर्तन होते है. लेखक इनसे अछूता नहीं रहता. अच्छे और बुरे बदलावों के इस दौर में भी लेखक कुछ बुनियादी उसूलों पर टिका हुआ है. दिव्य जी के बहुआयामी साहित्य और कला को देखकर आश्चर्य होता है. ये विचार कादम्बिनी के कार्यकारी संपादक श्री विष्णु नागर ने रक्खें. श्री नागर १६ मार्च २००८ को आयोजित दिव्य जी जन्म शताब्दी समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे. समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात कथाकार, नागालैंड और त्रिपुरा के पूर्व राज्यपाल पद्मश्री ओ.एन.श्रीवास्तव ने की. कार्यक्रम के शुभारंभ पर संयोजक श्री जगदीश किंजल्क ने दिव्य पुरस्कारों के इतिहास और उपलब्धियों की चर्चा की. समारोह का संचालन श्रीमती रश्मि वर्मा ने किया. प्रसिद्ध गायिका सुश्री अंशुरुपा खरे, इलाहाबाद व कवयित्री श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा ने दिव्य जी के भजन प्रस्तुत कर मंत्रमुग्ध कर दिया. प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने दिव्य जी के साहित्य पर सारगर्भित वक्तव्य दिया. श्री कैलाशचंद पंत ने दिव्य पुरस्कारों के लिए पुस्तकों की गुणवत्ता पर प्रकाश डाला. इस अवसर पर डॉ. शिवदास पाण्डेय-मुजफ्फरपुर, श्रीमती चमेली जुगरान-दिल्ली, श्री राम मेश्राम-भोपाल, डॉ० सुरेश निर्मल-गाजियाबाद एवं साबिर हुसैन, खीरी को प्रतिष्ठापूर्ण दिव्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया. श्री राम तेलंग-भोपाल, श्री महावीर रवांल्टा-धरपा, डॉ. श्रीराम ठाकुर दादा एवं श्री विवेकरंजन श्रीवास्तव-जबलपुर, डॉ. रमेश चंद्र खरे-दमोह, श्री प्रबोध कुमार गोविल-जबलपुर, एवं श्री कमलकांत सक्सेना-भोपाल को अम्बिका प्रसाद दिव्य रजत अलंकरणों से अलंकृत किया गया.

इस अवसर पर दिव्य पुरस्कार समिति की वार्षिक पत्रिका 'दिव्यलोक' के शताब्दी विशेषांक, कवयित्री श्रीमती चकोरी खरे की दिव्य चरितामृत, श्री गया प्रसाद श्रीवास्तव की दीवाना साई का एवं अंशलाल पन्द्रे द्वारा संपादित पुस्तक सुरहर सिंगार का विमोचन श्री विष्णु नागर ने किया. समारोह के दौरान श्री विष्णु नागर, पद्मश्री ओ.एन. श्रीवास्तव, श्री श्याम विद्यार्थी, श्री कैलाश चंद पंत, श्री कुमार सुरेश, डॉ. हरिहर शरण त्रिपाठी एवं श्रीमती रश्मि वर्मा का शाल श्रीफल से आत्मीय अभिनंदन किया गया. इस अवसर पर श्रीमती शकुन्तला खरे, श्रीमती रसवती खरे, श्रीमती चकोरी खरे, श्रीमती जयन्ती खरे एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी विभा की उपस्थिति उल्लेखनीय रही.

चांद से चेहरे पर क्यों लगे दाग: धब्बों का ग्रहण?

आपके चेहरे ही खूबसूरती पर दाग-धब्बों, फटे होंठो या थकी-थकी फूली आंखो का ग्रहण न लगे इसके लिए बस थोड़ी सी सावधानियां बरतने और सदियों से आजमाए गए नुस्खे अपनाने की जरुरत हैं. यहां हम ऐसी ही समस्याओं और उनके निदान का जिक्र कर रहे है-

ब्लैक हैड्स-यदि आपकी त्वचा तैलीय है तो आपके चेहरे पर कहीं भी ब्लैक हैड्स उभर सकते हैं. बेहतर होगा कि आप इन्हें किसी सौदर्य विशेषज्ञा से दूर कराएं क्योंकि आपके लिए इन्हें स्वयं दूर करना मुश्किल होगा. छिद्र फैल भी सकते है.

यदि एक बार चेहरे पर से ब्लैक हैड्स दूर हो जाएं तो सप्ताह में दो-तीन बार फेस मास्क अवश्य लगाएं ताकि फिर चेहरे पर ब्लैक हैड्स न होने पाएं. इस बीच तेल रहित फाउंडेशन हमेशा उंगलियों के पोरों को गोल-गोल घुमाते हुए लगाएं.

दाग-धब्बे अक्सर लोगों के चेहरे पर मुंहासे जैसे छोटे-छोटे दाने निकल आते है. दाना निकलते ही हम उसे दबाकर कील निकालने की कोशिश करते हैं पर इन्हें दबाने और कील निकालने में संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है. बेहतर तो यही होगा कि इन फुंसियों पर आप कोई भी एंटीसेप्टिक लोशन या क्रीम लगाएं और फिर फाउंडेशन लगाएं. इसके अतिरिक्त रात में लोशन लगाकर सोएं.

झुर्रियां-आंखो के इर्द-गिर्द लकीरों का उभरना चिताजनक होता है. पर ऐसा उम्र के बढ़ने के साथ होता है. आंखों के इर्द-गिर्द की त्वचा बहुत ही महीन और पतली होती है. इस पर बहुत ही कम तेल ग्रंथियां होती है.

इसलिए अक्सर यहां की त्वचा को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है. इस जगह आईक्रीम लगाना चाहिए. आंखो के इर्द-गिर्द बहुत ही हल्का फाउंडेशन या कम से कम पाउडर लगाना चाहिए क्योंकि कोई भी प्रसाधन गाढ़ा लगाने से उस पर लोगों की नजर पड़ती है और कमियां साफ नजर आती है.

फूली हुई आंखे-यदि आपकी आंखे नींद पूरी न होने के कारण फूली हुई है या थकावट से सूज गई हैं तो थोड़ी देर लेट जाइए और बादाम के तेल या गुलाब जल में एक रूई का फाहा भिगोकर अपनी आंखो पर १० मिनट रखिए. इससे आराम मिलेगा. इसके अलावा खीरे के पतले स्लाइस, आलू के स्लाइस या साधारण टी-बैग आंखों पर रखकर थोड़ी देर लेटी रहें. इससे भी आंखों को आराम मिलेगा.

होठों का फटना-सर्दियों के दिनों में अक्सर होंठ फटने लगते हैं. फटे हुए होंठो पर ऑलिव ऑयल या मलाई लगाएं. ये होठों को पोषण भी देंगे और उन्हें चिकना भी बनाएंगे. इसके अतिरिक्त विटामिन ई के तत्व भी जल्दी उपचार करने में सहायक होते हैं.

लाल बिहारी लाल को सीता रानी स्मृति सम्मान

नई दिल्ली, बसंत पंचमी की पूर्व संध्या पर साहित्य अकादमी, पानीपत, हरियाणा द्वारा कविता पाठ एवं हिंदी मनिषी सह समाज सेविका माता सीता रानी की स्मृति में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर लाल को हिन्दी भाषा में अमूल्य योगदान के लिए माता सीता रानी स्मृति सम्मान डॉ. बिजेन्द्र कुमार जेमिनी, एवं डॉ. अमर सिंह बधान द्वारा संयुक्त रुप से प्रदान किया गया.

कलाकार दिग्दर्शिका

इस हेतु फिल्म, टी.वी., पत्र/पत्रिकाओं एवं रंग मंच आदि से जुड़े लेखक, कवि, साहित्यकार, गायक, गायिका, हीरो, हीरोइन, संगीतकार, तकनिशियन, कलाकार आदि अपना विवरण नाम, पता, एवं फोन नं. के साथ निःशुल्क प्रकाशनार्थ प्रेषित कर सकते है. लिखें:-

लाल बिहारी लाल
संपादक, कलाकार दिग्दर्शिका
२६५ ए/७, शक्ति बिहार, बदरपुर, नई दिल्ली-४४,
दू० ०११-२६६६३०७३ ०९८६८१६३०७३

पत्रिका का विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के बीच अपना एक विशिष्ट स्थान है

पत्रिका के नंवम्बर ०७ एवं दिसम्बर ०७ के अंक मिले. सम्पापदकीय-'कान कौआ ले गया' आज की सामाजिक स्थिति एवं राजनीति की रोटी सेंकने वाले नेताओं का कच्चा चिट्ठा है.' इस देश का यारों क्या कहना? भारतीय जन जीवन का मूल्यांकन है जो दर्शाता है कि जनता की हालत क्या है? एक की हालत दिन-प्रतिदिन बद से बदत्तर होती जा रही है तो दूसरे की हालत दिन-प्रतिदिन बेहतर से बेहतर होती जा रही है. देवेन्द्र कुमार मिश्रा की कहानी 'डायन' जमींदारी ज्यादती की कहानी बंया करती है. ईश्वर शरण शुक्ल की कहानी 'क्या पढ़ना बेकार?' भारतीय समाज की विसंगतियों को उजागर करती है.

दिसम्बर ०७ अंक के सम्पादकीय के माध्यम से दिल्ली हाईकोर्ट के फैसले को उजागर कर आपने आम जनता के सामने इन नेताओं की कारगुजारियों को लाकर खड़ा कर दिया है जो सुरक्षा के नाम पर जनता की गाढ़ी कमाई को बरबाद करते हैं. आपने ठीक ही लिखा है-'आम आदमी घास-फूस की तरह प्रतिदिन मारे जाते है, उनकी सुरक्षा से सरकार को कोई मतलब नहीं है. क्या ये नेता किसी विशेष धातु के बने होते है या फिर इनके शरीर में किसी विशेष स्तर का खून होता है जो बहुत कीमती होता है या इनकी जान कुछ विशेष किस्म की होती है? अगर ये जनप्रतिनिधि हैं तो इन्हें जन यानी जनता से ही जान की डर क्यों?

तीर्थराज प्रयाग के बारे में कृष्ण यादव ने बहुत अच्छी जानकारी दी है. अन्य स्तम्भ भी पठनीय है. प्रुफ रीडिंग पर विशेष ध्यान दें. यह अति आवश्यक है. इस बात को अन्यथा न लेंगें. इस पत्रिका का विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के बीच अपना एक विशिष्ट स्थान है. इसका सारा श्रेय जाता है आपको और आपके जीवट प्रयास को. प्रत्येक अंक कुछ न कुछ ऐसी बातों को सामने रख जाता है कि इसका प्रत्येंक अंक संग्रहणीय तथा पठनीय हो जाता है. पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ.

डॉ.दिनेश प्रसाद शर्मा,भोजपुर, बिहार

+++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज का सितम्बर ०७ मिला आभार. हिन्दी दिवस पर महात्मा गॉधी और हिन्दी श्री मुरकुटे का आलेख, व्यंग्य समाज सुधार में जूते का योगदान प्रभावी लगे. कहानी कविता, लघुकथा भी रुचिकर है.

सम्पादन निष्ठा एवं लगन का परिचायक है. बधाई स्वीकारे.

मदन मोहन 'उपेन्द्र', ए-१०, शान्ति नगर, मथुरा-२८१००१

+++++++++++++++++++++++++

सस्ती पत्रिका

आप द्वारा प्रेषित पत्रिका का फरवरी ०८ अंक मिला. धन्यबाद. पत्रिका में प्रकाशित रचनायें स्तरीय एवं पठनीय लगी. नये लेखकों को भी आप प्रोत्साहित कर रहे है, यह शुभ है. मात्र ५ रुपये में ३६ पेज की पत्रिका देना सराहनीय प्रयास है. यदि कागज थोड़ा अच्छा हो व अपवाद स्वरुप रही त्रुटियों दूर हो तो सोने में सुहागा होगा. हिन्दी साहित्य की जो सेवा आप कर रहे हैं उसके लिए पुनः साधुवाद.

डॉ० श्याम मनोहर व्यास,
उदयपुर, राजस्थान

+++++++++++++++++++++

आदरणीय द्विवेदीजी महाराज,
सचिव विश्व हिंदी सा.से.सं.
विश्व प्रसिद्ध स्नेह समाज,
कब देगा विप्र को साहित्य श्री सम्मान
वर्ष ६ अंक एक इसका क्या राज,
संपादकों की चुनौती का किया गया बखान।
बंदा गया काम से अलबेला राही,
बिछुड़ल प्यार में अभय कुमाई भाई
नकली नोंटो की जानकारी जुटाई,
असली की असली पहचान बताई।
अमरनाथ कैसे हो सकते बेबस बदहाल,
देवेन्द्र कुमार सिंह देबू को घर से दिया निकाल।
अंजुम नईम जिंदगी की राह रोशन करता रमजान,
राम सहाय वर्मा साला स्वान और इंसान।
सौरभ कुमार तिवारी मेरा पहला प्यार ही भला,
संगठन से सुभाष जलोटा सबंधों की कला
ग्यारह साल बाद अपराधी को सजा मिली.
न्याय अब भी होता है,
गाय के दूध का औषधीय उपयोग
चुपके-चुपके होता है।
बैद्यनाथ धाम के पंडो का हाल,
चढ़कर छत पर देखें ससुराल।
इधर-उधर की ज्योतिष का कमाल
अंत में पुस्तक समीक्षा का बुरा हाल।
इससे तो अच्छा है चुटकुले लाइये,
राजरानी चाय के पैकेट मुफ्त पाइये।,
यादगार हो गया है सफलता का छक्का,
ग्राहक बनने का विप्र ने किया इरादा पक्का।

बलराम शर्मा 'विप्र', कोरबा, छ.ग.

+++++++++++++++++++++

कह जाना बड़ा आसान
निभाना है बड़ा मुश्किल
निभाता जो वही अपना
पुराने लोग कहते है
दिखा है आपमें जजबा
कि दरिया पार कर लोगे
सभी मुश्किल हुयी आसान
हमारे लोग कहते है

श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली'
आवास विकास कॉलोनी, रायबरेली

आप भी अपने विचार भेजें. पत्रिका कैसी लगी, क्या परिवर्तन किया जाए, क्या कमिया है. क्या अच्छे लगें. **संपादक**

लघु कथांए

समय व घड़ी

वह घड़ी साज था, घड़िया मुरम्मत करता, सभी को कहता, टाईम इज मनी. कोई कह दे कि पैसे अधिक ले रहे हो, कह देता टाईम इज मनी. समय से अधिक पैसे तो नहीं लेता. घड़ी रुकी तो समय रुक गया.

एक दार्शनिक वहां गया, घड़ी ठीक करवाने, उस को भी यही कह दिया, घड़ी रुकी तो समय रुक गया. उस दार्शनिक ने फट से उत्तर दिया, 'मूर्ख समय का घड़ी से क्या सम्बंध है, घडी रुकी तो समय कैसे रुका. मेरे हिसाब से यदि घड़ी कोई ठीक न करवाये, तो तेरी रोज़ी जरुर रुक जाती है, तुम्हें भूखों रहने की नौबत आ सकती है. समय तो घड़ी बिना भी चलता है.

घड़ी साज कहने लगा, 'घड़ी रुकी, तो समय सारणी नहीं बन पाती, योजनायें विफल हो जायेंगी.' विद्यालयों की कक्षायें चल न पायेगी. मानो समय रुक तो गया'

दार्शनिक ने कहा कि पुराने जमाने में इतनी घड़िया कहां थी. जिसके पास घड़ी होती थी, उसे सभी अमीर व इज्जतदार मानते थे. लड़के की शादी में देखते थे कि इसके पास घड़ी साईकिल है, अब तो कार घड़ियाल भी कोई नहीं देखता.'

'इससे समय तो नहीं रुका. जिसके पास घड़ी नहीं थी, वे धूप को देख कर समय का अनुमान लगा लेते थे.' दार्शनिक ने व्याख्या की.

घड़ी साज के पास, 'घड़ी रुकी तो समय रुक गया,; का उत्तर नहीं सूझ रहा था. दार्शनिक को कहा, 'टाईम इज मनी एण्ड यू गो'. मेरा समय मत खराब करो, घड़ी ठीक नहीं करवानी तो जा, मुफ्त में मेरा सिर न खा.' घड़ी साज बोला.

अब दार्शनिक कभी घड़ी साज का मुंह देखे, कभी अपनी खराब घड़ी को.

राजेन्द्र ग्रोवर,अम्बाला छावनी, हरियाणा

++++++++++++++++++++

पैसा माई:बाप

अन्धे के कटोरे में सिक्कों को खनकते देख, उसने अपने अन्दर का सभ्य मनुष्य कत्ल कर दिया, और मान अपमान का भाव हलक के नीचे उतार लिया. फिर बहुत ही धीमे और दबे शब्दों में बोला, "भाई जी मैं तुम्हें कुछ देने नहीं मैं मैं तो तुमसे कुछ पैसे मॉगने आया हूँ.", उसने बड़े झिझकते हुए मनके उद्‌गार उड़ेल दिये.

"अरे बाबू तुम तो भिखारी नहीं लगते." अन्धा बोला.

"नहीं भाई इस समय तो मैं भी मजबूरी में भिखारी ही हूँ."

"झूंठ, अन्धे का मजाक बना रहे हो और वह अपने सिक्कों को झोली में छिपाता हुआ, घबरा सा गया."

"झूठ नहीं भाई सच है, मैं मजाक बिल्कुल नहीं कर रहा. मै मंदिर में माथा टेकने आया हूँ और घर से खाली जेब ही चलता हूँ पर आज अचानक साइकिल पन्चर हो गयी, पन्चर जोड़ने वाला मिस्त्री पचास पैसे मॉग रहा है. उधार इसलिए नहीं कर रहा, क्योंकि उसकी बोहनी नहीं हुई है. मैं भगवान से रोज भीख में दुआ ही मॉगने आता हूँ. आज तुमसे पचास पैसे मांग लूंगा तो क्या बिगड़ जायेगा. मजबूरी में आदमी क्या नहीं करता. घर दो मील दूर जो है."

बूढ़े ने सिलवर की टूटी कटोरी उसके आगे बढ़ा दी और कहने लगा, "बाबू ले लो जितने पैसे चाहिए इसमें से ही निकाल लो."

"नहीं मैं ऐसे नहीं निकालूंगा, तुम अपने हाथ से दे दो."

तब उस अन्धे ने उँगलियों ये टटोल कर दस-दस के पॉच सिक्के उसकी हथेली पर रख दिये और वह उसके एहसान को दूसरे दिन लौटाने का वायदा कर गया. चलते हुए उसे एहसास हुआ कि सचमुच पैसा ही माई-बाप होता है.

++++++++++++++++++++

ईश्वर की हॅसी

विशाल पंडाल में प्रवचन चल रहे थे कि एक जिज्ञासु भक्त ने महात्मा जी से पूछा, "महाराज जी, ईश्वर कब हॅसता है."

तब महात्मा बोले, "बेटा ईश्वर दो ही अवसरों पर हॅसता है. पहली बार, तब जब कोई आदमी अपने अहम में चूर होकर कहता है कि इस संसार में सब कुछ मैं हूँ, ईश्वर कुछ भी नहीं है" तब सभी श्रोता हॅस गये. महात्मा जी पुनः बोले-बेटा! दूसरी बार ईश्वर तब हॅसता है, जब दो सगे भाई खेत की मेड़ पर लड़ते लड़ते घायल हो जाते है, और फिर उसी खेत की माटी में विलीन हो जाते है.

मदन मोहन 'उपेन्द्र', मथुरा, उ०प्र०

दिनेश त्रिपाठी सम्मानित

पाटन, गुजरात के युवा साहित्यकार, आलोचक शिक्षक दिनेश त्रिपाठी 'शम्स' को मानव संसाधन विकास मंत्रालय की स्वायत्तशासी संस्था नवोदन विद्यालय समिति द्वारा 'गुरू श्रेष्ठ' सम्मान प्रदान किया गया. श्री शम्स को यह सम्मान उनकी उल्लेखनीय शैक्षणिक सेवाओं को देखते हुए प्रदान किया गया है.

लाल को ब्रज गौरव सम्मान

लाल कला सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच के सचिव श्री लाल बिहारी 'लाल' को सामाजिक एवं सांस्कृति को समर्पित संस्था आसरा समिति, मथुरा द्वारा साहित्य सेवा में सृजनात्मक कार्यो के लिए 'ब्रज गैरव' की मानद उपाधि ा से सम्मानित किया गया.

डूबते सुरज के साथ

प्रस्तुत काव्य संग्रह में कुल १२ कहॉनिया है. प्रत्येक कहॉनी अपने आप में अनोखी है. एक बार पढ़ने के बाद मुझे दुबारा इसे पढने को मजबूर होना पड़ा. प्रस्तुत संग्रह की सभी कहॉनिया इतनी अच्छी है कि मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि किसको पहले पढ़ूं, किसको बाद में. किस कहॉनी को अच्छा कहूँ और किसे खराब. लम्बे अरसे बाद मुझे इस तरह का मानवीय संवेदनाओं/आम आदमी से जुड़ी, सत्यता की कसौटी पर खड़ी उतरी कहॉनिया पढ़ने को मिली. आज सामान्य से लेकर उच्च वर्ग तक के परिवारों में बुजुर्गो को बोझ समझा जाने लगा है. दुर्गा दीदी जैसी कई सत्य घटनाएं मुझे भी अपने आस-पास में देखने को मिली. जिसने मुझे वृद्धाश्रम की परिकल्पना को प्रेरित किया. दुर्गा दीदी में जहॉ आपने आज आम हो चुकी समस्या को उजागर किया है तो इकेवाना में आज मनचले युवाओं की मनोदशा को उजागर करती हुई प्रतीत होती है. गाईड में आपने साम्प्रदायिक ताकतों को मुहम्मद असलम के माध्यम एक अच्छी सीख दी है तो बटुआ में बेटियों के मां-बाप के निकट होने का भान कराती हैं. इस तरह सभी कहॉनियां वास्तव में काबिले तारीफ है. इस सुंदर लेखनी के लिए लेखिका कोटिशः धन्यवाद देता हूॅ. साथ ही आशा करता हूॅ कि आगे भी आपके और अच्छे संग्रह पढ़ने को मिलेगें.

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
लेखकः सुकीर्ति भटनागर
मूल्यःजिल्द-१००/-रु० सामाः ६०रु०
सम्पर्कः सुकीर्ति भटनागर, ४३२, अर्बन, एस्टेट, फेज-१, पटियाला-१४७००२

मुझको जग में आने दो

प्रस्तुत काव्य देखकर बड़ा ही श्रेयष्कर लगा कि रचनाकार ने आज समाज में कोढ़ बन चुके कन्या भ्रुण हत्या जैसे विकराल समस्या को इस खण्ड काव्य के माध्यम से उठाया है. इस विषय को चयन करने के लिए रचनाकार बधाई का पात्र है. वर्तमान में कन्या भ्रुण हत्या का जो खेल छोटे से लेकर बड़े शहरों तक में चल रहा है वह आने वाले समय में विकराल रुप धारण करेगा. जिसे रोकना असंभव होगा. आकड़ों पर गौर करे तो १९९१ से लेकर २००८ के बीच पुरुषों व महिलाओं के अनुपात में एक लम्बा फासला हो चुका है. वर्तमान में यह अनुपात प्रति एक हजार पुरुष पर ८६५ महिलाओं का रह गया है. आकड़ों के अनुसार २००१ में जहॉ पुरुष के मुकाबले महिलाओं की कमी मात्र ६ प्रतिशत थी, वह मात्र ७ वर्षो में घटकर १३ प्रतिशत की हो गई है. अगर यही अनुपात चलता रहा तो २०२५ तक पुरुष महिला अनुपात में लगभग २०-२५प्रतिशत का फासला हो जाएगा जो एक विभिषिका ही होगी. यह आकड़ा तो वर्तमान दर पर आधारित है लेकिन जिस तरह से इसका प्रचलन बढ़ता जा रहा है उसको देखकर यह कहा जा सकता है २०२५ तक पुरुष-महिला अनुपात में ३० से ३५ प्रतिशत की कमी होगी. हम विकास की ओर अग्रसित हुए है. हमारी सोच बदली है, रहन-सहन बदला है लेकिन पुत्र-पुत्री के मामले में हमारी सोच वहीं टिकी हुई है. घर का वारिस कौन? बुढ़ापे का सहारा कौन? लेकिन हम वास्तविकता देखे तो बुढ़ापे में मॉ-बाप की सेवा करने को लड़के/बहुए नहीं बल्कि लड़कियां ज्यादे ध्यान रखती है. बेटे/बहुए तो घर से बाहर रहते है उन्हें अपने भौतिकतावादी जिन्दगी से फुर्सत कहां है.

लेकिन एक यक्ष प्रश्न सामने खड़ा नजर आता है कि जब लड़कियां ही नहीं होगी यानि जन्मदात्री ही नहीं होगी तो लड़के/लड़कियां कहां से होगी. आखिर कब तक हम इस मानसिकता को ढोते रहेंगें कि लड़का ही वारिस होगा, बुढ़ापे का सहारा बनेगा. रचनाकार ने इस मुद्दे को काव्य के माध यम से उठाकर वाकई काबिले तारिफ कार्य किया है. एक बात और मन में सालती है कि भ्रुण हत्याओं में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका महिलाओं की ही होती है, चाहे वह मां, सॉस, ननद या स्वयं जन्मदात्री. मैंने तो कई ऐसी पढ़ी-लिखी लड़कियों को देखा है जो पुत्र की चाह में दो-तीन बार भ्रुण हत्या करवा चुकी है. इस संदर्भ में कानून बनने के बावजूद रोक नहीं लग पाई है. जरुरत है समाज को जागरुक करने की.

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
गज़लकारः अनिल शर्मा 'अनिल' **मूल्यः**निःशुल्क
प्राप्ति स्थलः८२, गुजरातियान स्ट्रीट, धामपुर-२४६७६१, बिजनौर, उ.प्र.

प्राप्त पुस्तकें

पुस्तक का नामः अमृत कलश
सम्पादकः शशांक मिश्र 'भारती'
प्राप्ति स्थलः हिन्दी सदन, बड़ा गॉव, शाहजहॉ पुर, २४२४०१, उ.प्र.
मूल्यः सत्तर रुपये मात्र

सम्मानार्थ प्रविष्टिया आमंत्रित है

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व अन्र्तराष्ट्रीय जगत में भी चर्चा की ओर अग्रसित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिककारों/पत्रकारों/समाजसेवियों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

क्र.सं.	पुरस्कार का नाम	विवरण	राशि
१.	साहित्य श्री सम्मान	अप्रकाशित कहॉनी तीन प्रतियों में	रु०३१००.००
२.	डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मान	एक नाटक तीन प्रतियों में	रु०२१००.००
३.	बाल श्री सम्मान	एक बाल कविता तीन प्रतियों मे	रु०११००.००
४.	कैलाश गौतम सम्मान	कोई एक हास्य/व्यंग्य कविता तीन प्रतियों में	कोई नहीं
५.	डॉ.किशोरी लाल सम्मान	श्रृंगार रस पर आधारित एक रचना तीन प्रतियों में	"
६.	प्रवासी भारतीय सम्मान	ऐसे प्रवासी प्रवासीय जो हिंदी की सेवा कर रहे है. किसी भी विधा में एक रचना तीन प्रतियों में सम्पूर्ण विवरण	"
७.	अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान	ऐसे विदेशी अहिन्दी भाषी नागरिक जो हिंदी की किसी भी प्रकार से सेवा कर रहे है.	"
८.	राजभाषा सम्मान	सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारी जो अपने विभाग में हिंदी को बढ़ावा दे रहे है. सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	"
९.	सम्पादक श्री	हिंदी में प्रकाशित पत्र/पत्रिका की नवीनतम तीन अंक तीन प्रतियों में	
१०.	विधि श्री	ऐसे विधिवेत्ता जो विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे है या हिन्दी की सेवा कर रहे है.	
११.	डॉक्टरश्री	डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी को बढ़ावा देने वाले हिंदी सेवी.सम्पूर्ण विवरण सहित तीन प्रतियों में	
१२.	शिक्षक श्री	शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१३.	पुलिस हिंदी सेवा पदक	पुलिस सेवा में रहते हुए हिंदी को बढ़ावा देने वाले सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१४.	विज्ञान श्रीः	ऐसे विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है. सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१५.	युवा पत्रकारिता सम्मान	पत्रकारिता के क्षेत्र में गत पॉच वर्षो में किए गये कार्यो का सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१६.	राष्ट्रभाषा सम्मान	अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए/हिंदी सेवा के लिए, सम्पूर्ण विवरण सहित लिखें.	
१७.	विहिसा अलंकरण	लेख/संस्मरण/व्यंग्य/नाटक/उपन्यास तीन प्रतियों में	

मानद उपाधियों हेतु अलग से टिकट युक्त जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रविष्टि आवेदन पत्र

सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

विषयः...........................सम्मान हेतु प्रविष्टि।

संदर्भः
महोदय,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के ६वें साहित्य मेला में सम्मान हेतु मैं अपनी प्रविष्टि प्रेषित कर रहा हूँ. विवरण निम्नवत है-
रचना/पुस्तक का शीर्षकः ....
प्रेषित प्रतियाः............................... विधाः.......................धनादेश/बैक ड्राफ्ट/डी.डी.का विवरणः राशि.................... बैंक का नामः...................... बैक ड्राफ्ट/डी.डी./चेक संख्याः......................

मै शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूॅ कि
१. प्रेषित रचना/पुस्तक मेरी मौलिक है.
२. मैंने संस्थान के पुरस्कार संबंधी नियम पढ़ लिए है और मैं उन्हें मान्य करता/करती हुं.

भवदीय

सलंग्नकः
१. सचित्र जीवन परिचय तीन प्रतियो में
२. टिकट लगा पता लगा लिफाफा
३. संबंधित रचना तीन प्रतियों में
४. बैक जमा पर्ची की छाया प्रति

हस्ताक्षर
पूरा नामः............................
पताः.................................
....
दिनांकः..............................

पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, रचनाएं लौटायी नहीं जाएगी. रचनाओं की मौलिकता को दर्शाना जरुरी है. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. ये पुरस्कार इलाहाबाद में गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में प्रदान किये जायेंगे.
विशेषः १.सभी प्रविष्टियों के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा भेजें। **२.** प्रविष्टि के साथ २००/-रुपयें का धनादेश मनिआर्डर/बैकड्राफ्ट सचिव के नाम से भेजें. चेक सीधे अपने क्षेत्र के किसी युनियन बैक आफ इंडिया की शाखा में जमा कर छाया प्रति भेजें. ३. संस्था के युनियन बैक ऑफ इंडिया के **खाता सं.** 538702010009259 में भी जमा कर रसीद की छाया प्रति संस्था को भेज सकते है. ४. प्रविष्ट्रियों के साथ सचित्र स्वविवरणीका अवश्य भेजें. ५. धनादेश को अंतिम विकल्प में रक्खें. ६. प्रत्येक प्रविष्ट्रि हेतु रचना, विवरण तीन प्रतियों में भेजना अनिवार्य है. ७. किसी अन्य प्रकार की जानकारी के लिए लिखें/ईमेल करें/देखें.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २००८

कार्यालयः एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी-09335155949 ईमेलः Sahityaseva@rediffmail.com, **Website:** www.swargvibha.tk

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः हृदयोद्गार
प्रस्तुत काव्य संग्रह ६३ रचनायों का संकलन है. जिसमें लगभग प्रत्येक क्षेत्र को रचनाकार ने छुआ है. कुछ पंक्तियां-

आग से खेलना पंतगों से सीखों,
हॅसते हॅसते मरना पतंगो से सीखो।

सोये रहना कलियुग है
जाग गया द्वापर आया।
उठ खड़ा हुआ त्रेतायुग है
हुआ गतिमान सतयुग आया।
+++++++++++++++++
मैया मोरी माखन क्यों न खिलाती
यह क्या बान पड़ी है तुझको
सुबह सवेरे उठाती है मुझको,सुबह उठते ही चाय पिलाती।
मैया मोरी माखन क्यों न खिलाती।
++++++++++++++++++++
धोती कुर्ता चोला पहन कर नेताजी बन जाये
चिकनी, चुपड़ी बातें करके जनता को फुसलाये,
जनमत पाने को ये नेता हथकंडे अपनाते,
बांटे रुपया पैसा मदिरा साड़ी भी लुटवाते।

रचनाकारःहरिराम शर्मा 'जांगिड़'
प्राप्ति स्थलः जूनी बागर, खीचिंयो का नोहरा, पीपली की गली, जोधपुर, ३४२००२,
मूल्यः दो सौ एक रुपये मात्र

चिन्तन का चन्दन

रचनाकारःॐ पारदर्शी
प्राप्ति स्थलः पारदर्शी साधना केन्द्र, २६१,उत्तरी आयड़, उदयपुर ३१३००१
मूल्यः एक सौ रुपये मात्र
+++++++++++++++++++++

अभिशाप-जन चेतना की जीवन्त कथा

श्री नन्दलाल भारती जितने नैतिक दायत्विों के प्रति सजग और परिपक्व साहित्यकार है उतने ही चिन्तनशील विनम्र और सहज भी है. श्री भारती की रचनायें पत्र-पत्रिकाओं में अक्सर प्रकाशित होती रहती है. विगत माह श्री भारती द्वारा लिखित बिन मां की लड़कियों को समर्पित उपन्यास अमानत प्रकाशित हुआ. जिसे साहित्य जगत और मीडिया से खूब प्रतिसाद मिला. भारती की रचनाओं में ग्रामीण जीवन का दर्द, पर-पीड़ा, सामाजिक असमानता, देश और समाज की फिक्र साफ-साफ दिखाई पड़ती है. साहित्य के माध्यम से समाज सेवा करने वाले इस साहित्यकार ने कई उपन्यास, लघु कथाएं एवं कवितायें लिखी है. अभिशाप उपन्यास के माध्यम से भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को समर्पित उपन्यास लिखकर नैतिक जिम्मेदारी का एहसास करा दिया है. भूमिहीन मजदूरों बदरी, सामी लम्बू, शान्दिेवी सतिया आदि पात्रों की पीड़ा को भोगे हुए यथार्थ की भांति प्रस्तुत किया है. खेत मालिक उधम बाबू, बिहारी बाबू, श्याम बाबा, टिक्कू बाबू, ठल्लू प्रधान के उत्पीड़न, शोषण को बारीकी से जहां प्रस्तुत किया है वही नरायन कमायन जैसे पात्रों के माध्यम से मालिकों के दिल एवं सामाजिक परिवर्तन को ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है. २७ खण्डों के इस उपन्यास के अधिकतर खण्ड में मजदूरों की सामाजिक और आर्थिक दुर्दशा साफ-साफ झलकती है परन्तु आखिर के खण्डों में मजदूर अपने परिश्रम आत्म बल, नेक संकल्प और नारायन जैसे शिक्षित पात्र के दिशा निर्देशन में न मजदूर स्वयं सहायता समूह की स्थापना करते है बल्कि कास्तकार भी बनते है. अधिकार के इस जंग में बदरी की मौत हो जाती है और नरायन भी नौकरी छोड़ने को मजबूर हो जाता है. खेत मालिकों के काफी विरोध और अड़चने खड़ी करने के बाद जाकर उनका हृदय परिवर्तन होता है. खेत मालिक जो सरकारी भूमि आवण्टन तक नहीं होने दे रहे थे. वे सामाजिक एकता के उदाहरण बनते है. वे भूमिहीनता और सामाजिक बुराईयां अभिशाप है के कलंक को मिटाने के लिए एकजुट हो जाते है. भूमिहीनों मजदूरों को बराबर का समझकर उनकी समृद्धि में सहयोगी बनते है. गरीब-अमीर छोटे-बड़े मजदूर मालिक के बीच निर्मित खाईयों को पाटने की सार्थक पहल भी है. उपन्यास अभिशाप सामाजिक परिवर्तन एवं गरीबी के खिलाफ शंखनाद साबित हो सकता है, जब प्रकाशक इस कृति को पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास करें.

विशिष्ट सदस्य
श्री सीताराम राम चौहान

एम.ए.-हिन्दी, साहित्य रत्न, बी.एड., प्रशिक्षित अनुवादक (दिल्ली विश्वविद्यालय)
प्रकाशित संग्रहः घूंटः कुछ कड़वे कुछ मीठे-कहानी संग्रह, दर्पण-काव्य संग्रह, एच.आई.वी. काउंसलिंग गाईड-हिन्दी अनुवाद युनेस्को प्रोजेक्ट, जवाहर लाल नेहरु-फ्रैंक मोरिस द्वारा लिखित पुस्तक का हिन्दी अनुवाद
सम्बद्धताः सिलवर लाईन इन्टरनेशनल, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली
अखिल भारतीय राज भाषा विकास संगठन, गाजियाबाद, उ.प्र.
पंजाब केसरी वरिष्ठ नागरिक कल्याण संघ, वजीरपुर, दिल्ली
सम्पर्कः सी-८/२३४-ए, केशव-पुरम, लारेन्स रोड, दिल्ली-११००३५
दू०: ०११.२७१०६२३६

प्रस्तावित

स्नेहाश्रम आपसे सहयोग की अपील करता है

१.स्नेहालय (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम) २.हिन्दी महाविद्यालय ३.चिकित्सालय
४.पुस्तकालय ५.प्रकाशन ६.गौशाला

इसमें समाज में तिरस्कृत वृद्धजनों व असहाय बच्चों के रहने खाने, अध्ययन, अध्यापन की सम्पूर्ण व्यवस्था, अध्यनरत छात्र/छात्राओं को अति आधुनिक पद्धति से रोजगार परक शिक्षण. अत्याधुनिक उपकरणों से परिपूर्ण गरीबों का निःशुल्क इलाज. विश्व के लगभग सभी बड़े लेखकों की पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकों से परिपूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सभी प्रकार के प्रकाशन की व्यवस्था, दस हजार गायों को रखने की व्यवस्था तथा गौमाता के त्याज्य सामग्री को औषधीय उपयोग में लाने हेतु शोध/अनुसंधान की भी व्यवस्था.

नोटः

१.जो भी व्यक्ति/संस्था १० लाख या इससे ऊपर का सहयोग जिस मद में देगी उसके नाम पर उसका नाम रक्खा जाएगा. २.१ लाख तक का सहयोग देने वाले व्यक्ति के नाम पर कमरे का नाम, पुस्तकालय में ५ लाख देने पर पुस्तकालय का नाम उसके नाम पर कर दिया जायेगा. ३. आप सहयोग सीमेन्ट, बालू, ईट, छड़ व अन्य उपयोग की सामग्री देकर भी कर सकते हैं. ४. इन संस्थाओं को संचालन एक कमेटी के तहत किया जाएगा.

जनसहयोग द्वारा, जनसहयोग से, जन के लिए

सहयोग के लिए लिखें या मिलें: सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान/
सचिव, जी.पी.एफ. सोसायटी
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: gpfsociety@rediffmail.com,sahityaseva@rediffmail.com

क्या आप चाहते हैं कि आपका बच्चा कोई अपराधी न बनें.
क्या आप चाहते हैं कि आपका ओजस्वी बच्चा आरक्षण का शिकार न बनें तो पढ़िए

आरक्षण, जातिवाद और नारी शोषण के खिलाफ जबरदस्त आवाज बुलंद करने वाला हर युवा के दिल की आवाज, हर नारी के मन की सोच को उजागर करने वाला **गोकुलेश्वर कुमार 'राही अलबेला'** का

लघु उपन्यास

रोड इंस्पेक्टर

कीमत 20 रुपये

अपनी प्रतियां बुक करायें, और हजारों के ईनाम पाए

अपनी प्रति अभी सुरक्षित करा लें. कहीं देर ना हो जाए..............

आप अपनी प्रति पोस्ट आफिस और बैंक चार्जेज से बचने के लिए यूनियन बैंक की किसी शाखा सें खाता संख्याः 538702010009259 जमा कर अपनी रसीद की कापी अपने पते के साथ कार्यालय को भेज देवें अथवा मनिआर्डर/बैक डाफ्ट. भेजें. चेक स्वीकार्य नही होगा. प्रत्येक बुकिंग का एक नंबर है, उनमें से कुछ नंबर ईनामी है.

लिखेंः **प्रसार सचिव,**
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

एक कप चाय

क्या आप चाहते है?

कि आपका एक कप चाय का दाम किसी वृद्ध को दो वक्त की रोटी दे सके

किसी असहाय वृद्ध को सहारा दे सके?

किसी अनाथ की जिंदगी संवार सके

किसी अंधे को सहारा दे सके

किसी अनाथ को शिक्षा दे सके?

किसी असहाय महिला के तन को ढंग सके.

तो फिर देर किस बात की

आज से ही प्रतिदिन सिर्फ एक काप चाय बचाना शुरु कर दीजिए. अपनी यह बचत आप मासिक/छमाही/वार्षिक स्नेहाश्रम को भेज सकते हैं. अपना सहयोग विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से धनादेश/डी.डी./बैंक ड्राफ्ट/चेक भेज सकते हैं अथवा संस्था के यूनियन बैंक ऑफ इडिया की किसी शाखा में खाता संख्या 538702010009259 में जमा कर डी.डी./बैंक ड्राफ्ट/चेक/नगद की छाया प्रति संस्था के कार्यालय में भेज सकते है.

लिखें: संचालक

स्नेहाश्रम

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद,उ.प्र., कानाफुसीः ०९३३५१५५९४९

email: sahityaseva@rediffmail.com

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. आर.एन.आई यूपीहिन्दी2001/8380 डाकपंजी.सं0: एडी.306/2006–08 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी